सावधान

काव्य संग्रह

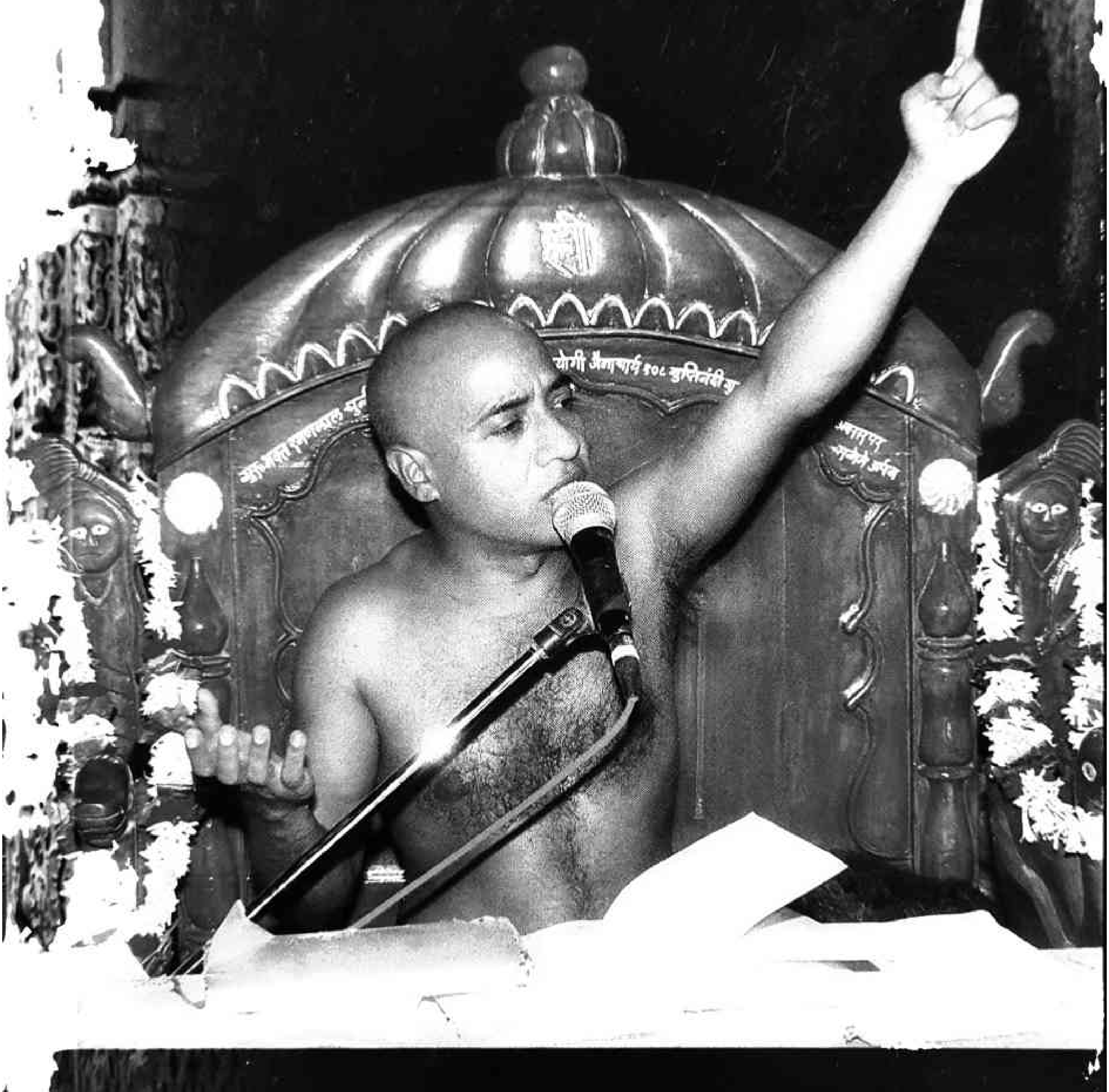

प्रकाशक

श्री धर्मतीर्थ

धर्मराजश्री तपोभूमि दिगम्बर जैन ट्रस्ट, औरंगाबाद

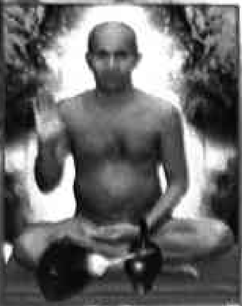

प.पू. गणाधिपति गणधराचार्य
श्री कुंथुसागरजी गुरुदेव

परम पूज्य आचार्यरत्न
श्री कनकनन्दीजी गुरुदेव

श्रीमद् परम पूज्य आर्षमार्ग संरक्षक, कवि हृदय, प्रज्ञायोगी
दिगम्बर जैनाचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव ससंघ

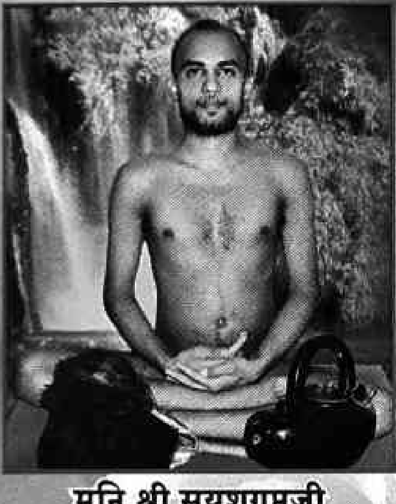

मुनि श्री सुयशगुप्तजी

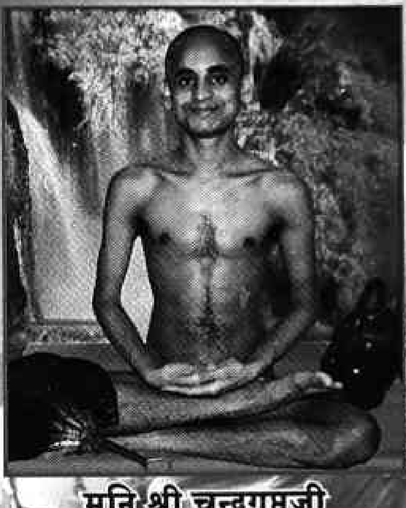

मुनि श्री चन्द्रगुप्तजी

ग.आर्यिका क्षमाश्री माताजी

आर्यिका आस्थाश्री माताजी

क्षुल्लिका धन्यश्री माताजी

सावधान

काव्य संग्रह (I & II)

लेखक

आर्षमार्ग संरक्षक, प्रज्ञायोगी दिगम्बर जैनाचार्य

श्री गुप्तिनन्दी गुरुदेव

गणिनी आर्यिका राजश्री माताजी

गणिनी आर्यिका क्षमाश्री माताजी

प्रकाशक

श्री धर्मतीर्थ, C/o धर्मराजश्री तपोभूमि दिगम्बर जैन ट्रस्ट

पोस्ट–कचनेर, जिला–औरंगाबाद (महाराष्ट्र)

Email : dharamrajshree@gmail.com

सावधान

काव्य संग्रह (I & II)

आशीर्वाद : ग.गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी गुरुदेव

प्रेरणा : वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनन्दीजी गुरुदेव

लेखक : आर्षमार्ग संरक्षक प्रज्ञायोगी दिगम्बर जैनाचार्य
श्री गुप्तिनन्दीजी गुरुदेव

: गणिनी आर्यिका राजश्री माताजी

: गणिनी आर्यिका क्षमाश्री माताजी

सर्वाधिकार लेखकाधीन ©

सम्पादक : वरदीचन्द राव विचित्र

प्रकाशन : तृतीय संस्करण - 1000

वर्ष : 2011

प्रकाशक : श्री धर्मतीर्थ, C/o धर्मराजश्री तपोभूमि दिगम्बर जैन ट्रस्ट
पोस्ट-कचनेर, जिला-औरंगाबाद (महाराष्ट्र)
www.digambarjainacharyaguptinandiji.wetpaint.com
Email : dharamrajshree@gmail.com

अर्थ सौजन्य : श्रीमती आशा मौला व श्री जयप्रकाशजी मौला परिवार
तिलकनगर-इन्दौर (मध्यप्रदेश)

मुद्रक : राजू ग्राफिक आर्ट
जयपुर • फोन : 2363339, मो. नं. : 9829050791
Email : rajugraphicart@gmail.com

समर्पण

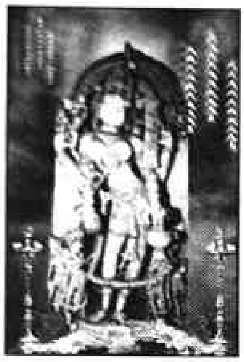

वागेश्वरी

तुम्हारी अनुकम्पा ने

मुझे

कला

विद्या

और सृजन शक्ति दी।

सच कहता हूँ,

उऋण होने के भाव से नहीं

सहज श्रद्धा से,

मैंने आज से

अपनी सम्पूर्ण संभावनाएँ

तुम्हें

समर्पित की।

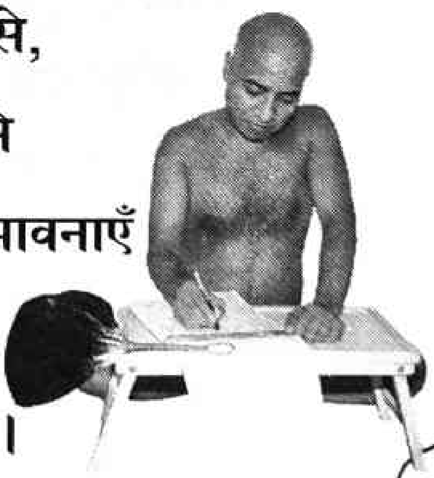

आशीर्वाद

बड़ी प्रसन्नता की बात है कि वैज्ञानिक धर्माचार्य कनकनंदीजी महाराज के संघस्थ हमारे शिष्य प्रज्ञायोगी दिगम्बर जैनाचार्य गुप्तिनन्दीजी ने अनेक विषयों को लेकर श्रेष्ठ कविताओं की रचना की है, कविता लिखना भी एक कला है हर कोई कविता नहीं लिख सकता। जो विद्वान होगा, चारों अनुयोगों का जिसको ज्ञान होगा वही श्रेष्ठ कविता लिख सकता है। वर्तमान में श्रावकों, गृहस्थों में अनेक प्रकार का शिथिलाचार बढ़ गया है। श्रावक होकर शृंगारप्रिय पदार्थों का उपयोग करने लगा है जो हिंसा आदि से प्राप्त प्राणियों के शरीर का अंश है उसका प्रयोग करता है, उन सबका विरोध भी इन कविताओं के अन्दर है। पाठकों को यह पुस्तक पढ़कर लाभ होगा, पुस्तक पठनीय है। अत: अवश्य ही पढ़ना चाहिये। लेखक व प्रकाशक को आशीर्वाद।

- ग. गणधराचार्य कुन्थुसागर

प्रेरणा

रवि की रश्मि अंधकार को दूर करती है, कमल को विकसित करती है परन्तु कवि की कविता अज्ञान रूपी अंधकार को दूर करती है, हृदय रूपी कमल को विकसित करके भूत-कालीन घटना को उद्घाटित करने के साथ-साथ उज्जवल भविष्य की प्रगति के लिए प्रेरित करती है। इसलिये कहते हैं- ''जहाँ न पहुँचे रवि वहाँ पहुँचे कवि''। क्योंकि रवि की वर्तमान की रश्मि भविष्य को प्रकाशित नहीं कर सकती है अतएव कवि का कर्त्तव्य होता है कि भूत की सत् प्रेरणा से वर्तमान को जगाये एवं भविष्य के लिये प्रेरित करे।

कविता भाषा एवं भाव की मधुरतम क्रांतिकारी अभिव्यक्ति है वह प्रकारान्तर में भाषा की प्रिय प्रायोगिक प्रतिमूर्ति है। कविता में जब उपर्युक्त तीनों विश्लेषण जीवन्त हो उठते हैं तब वह कविता 'सत्यं शिवं सुन्दरं', 'गंभीरं, मधुरं, मनोहरतरं' हो जाती है। स्पष्ट रूप से कहें तो कविता निम्न गुणों से युक्त होती है—

जग सुहितकर सब अहितहर श्रुति सुखद सब संशय हरैं।
भ्रमरोगहर जिनके वचन मुख चंद्र तै अमृत झरैं॥

अतएव केवल प्राचीन कविता या अर्वाचीन कविता होने मात्र से कोई अच्छी या बुरी नहीं हो जाती है। क्योंकि

कुछ प्राचीन कवि राजादि की प्रशंसा करने के लिये उसके दुर्गुणों को भी सुगुण रूप से प्रकट करते हैं। उनका आचरण निम्न प्रकार होता था—

उष्ट्राणां हि विवाहे तु गीतं गायन्ति गर्दभा:।
परस्परं प्रशंसन्ति अहोरूपम् अहो ध्वनि॥

अर्थात् ऊँट ने अपने विवाह में गधे को गीत गाने के लिये निमंत्रण दिया। गधा ऊँट की सुन्दरता की प्रशंसा करने लगा तब ऊँट गधे की ध्वनि की प्रशंसा करने लगा।

इसी प्रकार कुछ कवि चापलूसी से राजा, सेठ, नेता, स्त्री व पंथ, साधु आदि की अयथार्थ, अतिरंजित, मिथ्याप्रशंसा में कविता लिखते हैं। अन्याय, अत्याचार, पापाचार, शोषण, श्रृंगार, अश्लील चुटकलात्मक गन्दी कविता आदि लिखकर स्वयं को तुच्छ बनाते हैं।

इसलिये कालीदास ने कहा था—

पुराणमित्येव न साधु सर्वं, न च काव्य नवमित्यवद्यम्।
सन्त: परीक्षान्यतरत् भजन्ते, मूढ पर प्रत्ययनेय बुद्धि॥

कविता, संगीत की स्वर लहरी से एवं भावात्मक प्रभाव से मानसिक अवसाद, चिन्ता, भय, जड़ता आदि दूर होते हैं। प्रसन्नता, उत्साह, साहस, सक्रियता की वृद्धि होती है। आधुनिक विज्ञान से सिद्ध हुआ कि इससे गाय आदि दुधारू पशु अधिक दूध देते हैं। वृक्ष अधिक पल्लवित, पुष्पित, फलित होते हैं। सुना जाता है कि दीप -राग से दीपक प्रज्ज्वलित हो जाता था एवं मेघ मल्हार राग से वर्षा

होती थी। प्राचीन भारत में तो प्राय: प्रत्येक विषय पद्य/कविता/छन्द रूप में ही लिखा जाता था। प्राचीन धर्म, दर्शन, आयुर्वेद, पुराण संहिता, कला, वास्तु कला, गणित आदि साहित्य के अध्ययन से यह स्पष्ट हो जाता है। प्राय: प्रत्येक धर्म में प्रार्थना, पूजा, भजन, आरती पद्य में ही है, क्योंकि सस्वर गान से मन लगता है, विषय सरलता से स्मरण रहता है। उच्चारण एवं श्रवण में सरसता/मधुरता आती है जिससे भक्ति भावना अधिक जागृत होती है। लीनता/स्थिरता/तन्मयता अधिक होती है अत: भक्त स्वयं को भगवान् से अधिक समीप अनुभव करता है। जिसके कारण भक्त आध्यात्मिक शान्ति/सन्तुष्टि का अनुभव करता है और भी एक अनुभवपरक विषय यह है कि जिस विषय को गद्य में अधिक शब्द से अभिव्यक्त कर सकते हैं उसी विषय को पद्य में कम से कम शब्द से अभिव्यक्त कर सकते हैं।

हमारे संघस्थ प्रज्ञायोगी दिगम्बर जैनाचार्य गुप्तिनंदीजी की कविताओं का प्रकाशन "**सावधान**" पुस्तक में हो रहा है। **वे एक उदीयमान क्रांतिकारी कवि हैं।** इनकी कवित्व शक्ति को देखकर मैंने उनको कविता लिखने के लिये प्रेरणा उत्साह एवं मार्गदर्शन दिया जिसका सुफल आप लोगों के समक्ष है। मैं उनके उज्ज्वल भविष्य की मंगल कामना करता हूँ, प्रकाशकों के लिये मेरा शुभाशीर्वाद।

- वैज्ञानिक धर्माचार्य कनकनंदी

सम्बल

संसार में शायद ऐसा कोई नहीं होगा जिसमें कोटि-कोटि बुराईयों के बीच एक भी अच्छाई ना छिपी हो। उसे अनुभव कर लेना ही व्यक्तित्व की ऊँचाई का प्रथम सोपान है और ऐसे ही विरले पुरुष महामनीषी, वैयाकरण, दार्शनिक, मेधावी, श्रमण, वैज्ञानिक तथा कवि होते हैं। जिनके श्रेय मार्ग का अनुकरण कर आने वाली पीढ़ी प्रेय को प्राप्त करती रहती है। इसी उदात्त भावना से पुण्य पुरुष सन्मार्ग में संलग्न रहते हैं। परम पूज्य गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी गुरुदेवसे दीक्षित शिष्य प्रज्ञायोगी दिगम्बर जैनाचार्य श्री गुप्तिनंदीजी भी अपनी अल्पवय से ही श्रमण परम्परा में महाव्रतों के अनुपालन में कृतसंकल्प हैं। पूज्य वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनंदीजी गुरुदेव ने आपकी भाव अभिव्यक्ति व प्रभावक काव्यशैली की प्रतिभा को परखा तथा उसे प्रखर व परिष्कृत करने की प्रेरणा दी, जिससे आप अहर्निश इसमें गतिशील रहे फलस्वरूप इस तनुतननूतन काव्य कृति 'सावधान' का आपने सृजन किया। इन्हीं

आचार्य देव के सान्निध्य में अल्पावधि में आपने जैसी अपनी प्रतिभा का निखार किया इससे पाठकगणों को शिक्षा लेनी चाहिए। इसी प्रकार सभी को अपनी विशिष्ट प्रतिभा प्रस्फुटन के लिए हार्दिक निग्रह-अनुग्रह पूर्ण हस्तावलंबन पाने का प्रयास करना चाहिए जिससे प्रत्येक व्यक्ति अपनी एक विशेष पहचान बना सकता है।

पाठकगण यदि अपने अन्तस् में प्रसुप्त एक गुण विशेष, योग्यता विशेष को भी कविता के माध्यम से निखार ले तो कवि की काव्य साधना सफल सिद्ध होगी। प्रस्तुत कृति में कल्पना शक्ति को शब्द का रूप देकर जनमानस में राष्ट्रीयता, सामाजिकता, आध्यात्मिकता इत्यादि समसामयिक विषयों पर अपने कर्त्तव्यों के प्रति संवेदनशील होने के लिए प्रेरित किया गया है। आप इसी प्रकार सर्वजनोपयोगी काव्यादि साहित्य साधना में संलग्न रहें यही हार्दिक कामना करता हूँ।

इति भद्रं भूयात्।

– उपाध्याय श्री कुमार विद्यानन्दी

दृष्टिकोण

कविता और मनुष्य का सम्बंध चिरंतन है। जीवन के विविध आयामों की भाँति कविता भी मनुष्य की मूलभूत प्रवृत्ति है। इसी परम्परा में प्रज्ञायोगी दिगम्बर जैनाचार्य श्री गुप्तिनन्दीजी गुरुदेव ने '**सावधान**' का शंखनाद किया है। यह शंखनाद दम्भ का नहीं बल्कि सामाजिक सरोकार का है। कविता के बारे में उन्होंने सिद्ध किया है कि यह मानव जीवन के श्रेष्ठ संचालन व प्रकृति के सत्य को पहचानने का दिव्य मार्ग है। प्रज्ञायोगी दिगम्बर जैनाचार्य श्री गुप्तिनन्दीजी गुरुदेव का काव्य कर्म दूसरों के दर्द की अनुभूति करने तथा संवेदनात्मक धरातल पर मनन, चिंतन व सृजन है। इसके द्वारा भटके, डगमगाते कदमों को दिशा देना संभव है। '**सावधान**' की विषय वस्तु लगभग हर क्षेत्र को स्पर्श करती है वस्तुत: ये कविताएँ इस सृष्टि पर जीवमात्र के प्रति दया, करुणा तथा अहिंसा के भावमयी समर्पण की द्योतक है।

कविता एक चिंतनशील मनुष्य की मानसकृति है अत: इसका विश्लेषण किसी कारखाने में निर्मित वस्तु की तरह तो नहीं किया जा सकता, न किसी सर्वमान्य निष्कर्ष पर ही पहुँचा जा सकता है क्योंकि हर रचनाकार अपने संस्कारों, मूल्यों, अनुभवों तथा आदर्शों की आधारभूमि पर ही अपनी सृजनधर्मिता का निर्वाह करता है। फिर भी मनन, चिंतन, अध्ययन व अभ्यास से किसी कार्य की सिद्धि व उत्कर्ष प्राप्त किया जा सकता है। प्रज्ञायोगी दिगम्बर जैनाचार्य श्री गुप्तिनन्दीजी गुरुदेव की रचनाएँ भी इसी श्रेणी में हैं, क्योंकि उन्होंने स्वयं इस सत्य को स्वीकारते हुए संभावनाओं के द्वार खुले रखे हैं।

– डॉ. ज्योतिपुञ्ज

कार्यक्रम अधिशाषी, आकाशवाणी–उदयपुर

समिधा

सत्य बोल देना, सत्य कह देना, सत्य को मनवा लेना सहज है। उससे भी उपर सत्य को लिखकर, आम जनमानस को हृदयंगम कराकर सोचने विचारने व समझने के लिए प्रेरणा प्रदान करना है। आमजनमानस उक्त बात को स्वीकार करने लगे, अपने व्यावहारिक, सामाजिक व राजनीतिक जीवन में उपयोग करने लगे यही सच्चे अर्थों में काव्य का सदुपयोग है। प्रज्ञायोगी दिगम्बर जैनाचार्य श्री गुप्तिनन्दीजी गुरुदेव की काव्य कृति 'सावधान' में सत्य एवं यथार्थ काव्य का चित्रण किया गया है तथा नवीन काव्य प्रयोग किए गये हैं। वर्तमान युवा पीढ़ी तथा आबाल वृद्ध वनिता सभी के लिए काव्य के माध्यम से संस्कार पैदा करने का प्रभावी प्रयत्न किया गया है। प्रस्तुत कृति में गुरुदेव ने तटस्थ भाव से निरभिमानी बनकर सुधारवाद का प्रयोगात्मक चित्रण किया है। यद्यपि मैं इसकी सम्पूर्ण निर्दोषता का दावा तो नहीं करता, उसका निर्णय तो पाठकों पर ही छोड़ता हूँ तथापि मेरी भावना है कि जन सामान्य से लेकर विद्वत् वर्ग के

लिए सरल भाषा, शैली में लिखी रचना का अध्ययन करें एवं इसके माध्यम से सभी पाठक स्वयं का आत्म निरीक्षण करें, अपने एक-एक भाव की जाँच पड़ताल करें, उसे हृदयंगम करें।

उक्त कृति में निहित मानव समाज के ऊँचे चरित्र, त्याग, शौर्य, आत्मोत्सर्ग की प्रेरणा, समाज व राष्ट्र में व्याप्त बुराईयों तथा उसके दुष्परिणाम की वेदनातथा निष्कलंक युग के नवनिर्माण की आकांक्षा, लेखक के व्यक्तित्व राष्ट्रीय चरित्र व राष्ट्रनिष्ठा की परिचायक है। आपकी लेखनी ने सिद्ध किया है कि साधु को साम्प्रदायिक, संकीर्णता से उठकर आत्म कल्याण के साथ-साथ राष्ट्र निर्माण, विश्वकल्याण के विषय में सोचना चाहिए।

गुरुदेव की लेखनी और अधिक परिमार्जित होकर सदा यूँ ही निर्बाध गति से चलती रहे ऐसी मंगलकामना करता हूँ और आशा करता हूँ इस पुस्तक का पूर्ण सम्मान, आदर-सत्कार तथा सदुपयोग हो।

-बलवंत 'बल्लु'
ऋषभदेव

अनुभूति

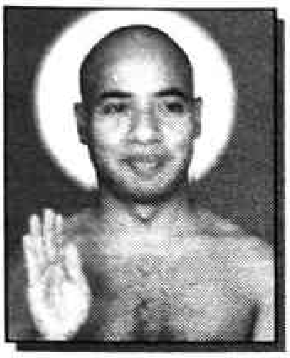

मैंने श्रमण पथ को अंगीकार किया है। श्रमण आत्मसाधक के साथ समाज सुधारकर भी होते हैं। इसी भाव से आत्मसाधना के साथ-साथ सामाजिक विसंगति दूर करना भी मेरा ध्येय रहा है। ध्येय पूर्ति हेतु काव्य विद्या भी अपने आप में सशक्त माध्यम है। सीमित शब्दों में प्रभावशाली ढंग से अपने भावों की लयबद्ध अभिव्यक्ति करने वाली कविता के प्रति बचपन से ही मेरा रूझान था परन्तु वह गुप्त और सुप्त रूप में ही था। साधना के पथ पर आने के बाद मेरे शिक्षागुरु वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनंदीजी गुरुदेव ने मुझमें काव्य प्रतिभा को देखा और मुझे प्रोत्साहित किया। पूज्य दीक्षा-शिक्षा गुरु व माँ शारदा के आशीर्वाद से मैं विगत पन्द्रह वर्षों से काव्य साधना में रत था। गत बारह वर्षों से मेरी रूचि छन्दमुक्त कविता में बढ़ी। ऋषभदेव वर्षायोग में मेरा संपर्क सृजनशील साहित्यकार उपेन्द्र 'अणु', वरदीचन्द राव विचित्र, भविष्यदत्त 'भविष्य' से

हुआ। आप सभी ने मेरी काव्य प्रतिभा को परिमार्जित व संवर्द्धित किया। साहित्य प्रेमी कवि बलवंत 'बल्लु' ने भी मुझे प्रोत्साहित किया तथा मेरा काव्य संग्रह प्रकाशन हेतु देने का बार-बार मुझसे निवेदन किया। उनके हार्दिक आग्रह को देखकर मैंने आचार्यश्री से आज्ञा लेकर पुस्तक उन्हें सौंप दी। इस प्रकार यह काव्यकृति 'सावधान' आपके सम्मुख प्रस्तुत है। इसका सम्पादन वरदीचन्द राव 'विचित्र' ने करके इसे काव्य कृति का रूप दिया है। साथ ही आर्यिका राजश्री व आर्यिका क्षमाश्री माताजी ने भी पूर्ण सहयोग दिया। आप सभी साधुवाद के पात्र हैं।

अंत में सभी प्रत्यक्ष परोक्ष प्रेरक व सहयोगियों को क्रमशः नमोऽस्तु/प्रतिनमोऽस्तु/समाधिरस्तु व आशीर्वाद देते हुए एवं कृति के प्रति आपकी प्रतिक्रिया की आशा रखते हुए यहीं विराम लेता हूँ।

–प्रज्ञायोगी दिगम्बर जैनाचार्य गुप्तिनन्दी

सम्पादकीय

कविता व्यवसाय है? कविता मनोरंजन है? कविता लफ्फाजी है या कविता बुद्धि–विलास है? कविता सर्जनात्मकता है। कविता मन की तरंगे हैं? कविता मूल्यों का विकास है? या कविता और कुछ है? मेरी दृष्टि में कविता है विचारों का एक पुंज जिससे बनता है तेवरदार–धारदार हथियार। यह हथियार शत–प्रतिशत अहिंसात्मक पर 'घाव करे गंभीर' की क्षमता वाला होता है। कविता वह सागर है जिसे शब्दों के घेरे में बांधना संभव नहीं है। कविता वह निर्झर है। जिसकी तान और शीतलता सबके लिए है। कविता वह आकाश है जो हरेक को उड़ान के लिए उपलब्ध है।

कविता किसी वाद, जाति, प्रकार या बंधे–बंधाए स्वरूप की शब्दावली नहीं है वरन् वह है नैसर्गिक पवन, नैसर्गिक सृजनऔर नैसर्गिक अनुभूति जो सर्वत्र विद्यमान है। इसे प्रकट करना, जबरन ओढ़ना सहज नहीं कृत्रिम है क्योंकि नैसर्गिक वह है जो स्वत: प्रकट हो। रचनाकार तो मात्र द्रष्टा होता है तथा अपना सीमित योगदान देता है। वह तो बीज बिखेरता है अंकुरण उसका दायित्व नहीं होता, उसका काम है अंकुरण के लिए वातावरण बनाना।

ऐसा ही वातावरण निर्माण प्रज्ञायोगी दिगम्बर जैनाचार्य श्री गुप्तिनन्दीजी गुरुदेव ने **'सावधान'** कृति से किया है। कुल 46 कविताओं में जीवन के विविध क्षेत्रों को आधार बनाकार इन्होंने विचार के बीज, चेतना की खाद,

संकल्प की बाड़ लगाई है। इस कविता–यात्रा में अनेक पड़ाव हैं, खट्टे–मीठे अनुभव हैं, सीधे–सादे वक्तव्य हैं, गहन चेतना को झकझोरते आह्वान हैं तो यथार्थ से उपजी कटुता व मृदुता भी है। सावधान में प्रज्ञायोगी दिगम्बर जैनाचार्य श्री गुप्तिनन्दीजी गुरुदेव की लेखनी के बहुआयामी स्वरूपों को, विविधपक्षीय शब्द चित्रों को उकेरा है। एक कुशल शब्द चित्तेरा बनने की उनकी ललक एवं सधे भावों ने ही मुझे उनसे अनायास ही जोड़ दिया और में संपादन कर्म हेतु प्रस्तुत हुआ।

'**सावधान**' का ध्येय सभी को सावधान करना है, वह अज्ञ हों या प्रज्ञ, पाठक हों या लेखक, पुरोगामी हो या अधोगामी, सकारात्मक हो या नकारात्मक दृष्टि वाला हो या इससे परे और कुछ। सामाजिक सरोकार को पूर्त करती दिगम्बर जैनाचार्यश्री की लेखनी उत्तरोत्तर तेजस्विता धारण करते हुए परिवेश में व्याप्त धुंधलके को चीरने में सफल होगी। यह लेखनी साहित्यिक आभामंडल से सत्य–सूर्य प्रकट कराकर सभी को यथार्थ से साक्षात्कार कराए उस घड़ी की प्रतीक्षा है। किन्तु उस घड़ी की पहचान हेतु हमें सक्रियता, सदाशयता और सहयोग समर्पित करना होगा तभी तो सावधान हो पायेंगे, सावधान कर पायेंगे।

– वरदीचंद राव विचित्र

कविता क्रम

क्र.	कविता	पृ.
	सावधान भाग-I	
1	सावधान	19
2	वंदना	20
3	अभिलाषा	21
4	माँ की शरण	22
5	यह कैसा धर्म	23
6	हमें क्या हो गया है ?	25
7	विषम घड़ी	27
8	कभी-कभी	28
9	आज कुछ बदला हुआ हूँ	29
10	मैं सदा तुम्हारे साथ हूँ	30
11	आज का एकलव्य	31
12	स्टोन कल्चर	32
13	मत लांघो तुम लक्ष्मण रेखा	34
14	पश्चात्ताप	35
15	चक्रव्यूह	36
16	सीताहरण	40
17	कंस मामा	43
18	पूतना	46
19	सीमा रेखा	47
20	खेल किसे कहते हैं?	48
21	तुम से हटकर	50

क्र.	कविता	पृ.
22	तुमने क्या दिया	51
23	प्रहार	53
24	जिन्दगी	55
25	नेतागिरी	56
26	आबाद रहो प्रजा	57
27	आज कान्हा रो रहा है	59
28	अलगाववाद	60
29	कान के कच्चे बनो मत	61
30	आतंकवाद या शांति	63
31	तुम्हें भारत याद करें	64
32	भारत की प्रगति	65
33	भारत माँ की पुकार	67
34	अधिकार सबका है	69
35	भारत की सीमा रहे वही	71
36	मुर्गी का अण्डा	74
37	मौत की एक चाल	75
38	तिजोरी	76
39	पतंग	77
40	कलम	78
41	भ्रष्टाचार	79
42	कुर्सी	80
43	कुआँ	83

कविता क्रम

क्र.	कविता	पृ.
44	रोड़लाईट	82
45	जादूगर	85
46	दिवाकर	87
47	सावधान	88
	सावधान भाग-II	
48	शशि तुम्हें ग्रहण क्यों लगा?	91
49	महाभारत	93
50	कहानी के पात्र	94
51	पंखा	95
52	माँ	96
53	फुटबाल	97
54	मैं आदमी हूँ ?	98
55	झांसी की रानी का बलिदान	100
56	राणा प्रताप	102
57	आज कान्हा रो रहा है	103
58	माता-भाग्य विधाता	104
59	शारदे वंदना	105
60	क्यों मुझको वन छोड़ रहे हो ?	106
61	नारी की व्यथा	107
62	घड़ी	109
63	विवाह	110
64	जैनी होटल	111

क्र.	कविता	पृ.
65	बैण्ड बाजे	112
66	अभिनंदन	113
67	महावीर का सम्मान	113
68	मेरा देश महान्	114
69	आधुनिक नारी	114
70	बहुरंगी दुनिया	115
71	आइना	115
72	सब कदम मिलाइये	116
73	गुरुवर को नमन	116
74	जैन लिखना छोड़ दो	117
75	समय अनमोल	119
76	आनंद	120
77	आतम की रटन	121
78	आराम	122
79	आकर्षण में विकर्षण	124
80	रावण	126
81	शंका	129
82	अबला	131
83	बन जाओ तुम युग कल्याणी	132
84	देश की दुर्दशा	133
85	उड़ान	134
86	भारतीय पुलिस	135

सावधान भाग-I

गणिनी आर्यिका राजश्री

सावधान
होइये
सावधान
खोलिये
भ्रष्टनीति, कूटनीति
के विचार
छोड़िये
क्रांतिकारी संत के
विचार मन
से जोड़िये
गुरु हृदय पुकार को
अपने दिल से
जोड़िये
सावधान यह
कृति
जगाये सुप्त
संस्कृति
धर्म देश राष्ट्र की
बिगड़ रही
जो आकृति
गुरु कृपा-संदेश से
वो दूर होगी
विकृति
सावधान इस कृति
से सावधान होइये

□□□

वंदना

माँ शारदे, माँ जिनवाणी
मुझे वर दे।
दिगदिगंत प्रसरित तम
जग में,
क्लांत त्रस्त जीवन है
मग में,
मन तिमिर हर ले।
आज तेरी रश्मियों से
क्यों है वंचित,
इस धरा के थे प्रखर
जो शब्द संचित,
वंदना अंगीकरण कर ले।
मिथक गर्व, घृणा, व्यसन
ईर्ष्या छोड़ूँ,
क्रोध, वैर, अनृतम् की
दौड़ ना दौड़ूँ,
चक्षुओं में मेरे माता, ज्योति
तू भर दे।

□□□

अभिलाषा

हे गुरुवर
कुन्थुसागर,
तुम हो वात्सल्य रत्नाकर
उसकी बूंद मुझे बनाएँ।
तुम हो गणधर आचार्य
श्रीचरणों की धूल
मुझे बनाएँ।
हे पूज्य कनक ज्ञानेश,
तुम हो प्रज्ञा-दीपक
उसकी लौ मुझे बनाएँ।
हे धर्मतीर्थ
हे अध्यात्म दिवाकर,
गुप्ति को अपनाएँ
निज मार्ग का पथिक बनाएँ। □□□

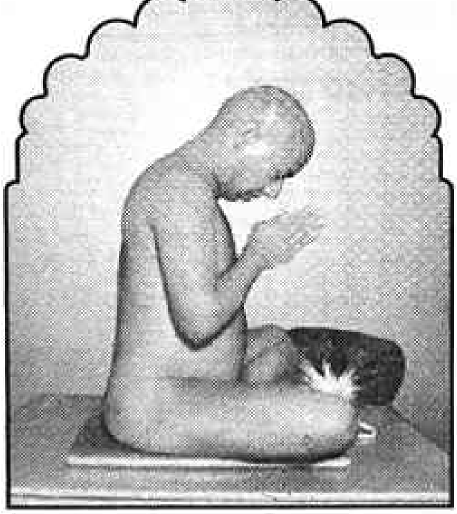

माँ की शरण

हे ममतामूर्ति माँ!
तुम रूठी तो लगा,
सारा जहाँ रूठ गया मुझसे
तेरी यह खामोशी
असह्य है माँ।
तू वह प्रेरणा है
कि तेरे कारण
भगतसिंह
फाँसी चूम गए।
महावीर
भटक कर भी
युग प्रवर्तन की ओर
घूम गए।
माँ मुझे भी
ले ले अपनी शरण छाँव।
ताकि पा जाऊँ चिर सुख
पूज पाऊँ
मातृत्व भरे
पावन पाँव।

□□□

यह कैसा धर्म

यह कैसा धर्म ?
जो
जड़ को तो पूजता
पर
जिन को ना बूझता।
प्रतिमा को
देखा करता
और
प्रतिभा को
अनदेखा करता।
जो
शव की पूजा करता
और शिव को
घूरा करता।
जो
मुनि चित्रों की
अर्चा करता
पर
जीवंत मुनियों की

निंदा करता।

जो आगम की चर्चा

करता

और

विपरीत

चर्या करता।

यह धर्म नहीं

यह तो

बहिरात्मा से सांठ-गांठ

और अनैतिकता का जमघट है।

अंतरात्मा के साथ

किया गया

सबसे बड़ा कपट है।

□□□

हमें क्या हो गया है ?

आज हमें क्या हो गया है
हमें जाना था कहाँ
और हम
किधर चल दिये।
आदियुग-प्रवर्तक
तीर्थंकर
आदिनाथ ने
शुरुआत की अध्यात्म की,
बीज बोया
शांति का,
वे ले गये हमें
स्वातन्त्र्य की ओर।
किन्तु हम
कितने पथबदलू निकले
हमें जाना था
सन्मार्ग पर
अपने गंतव्य की ओर,
प्रत्युत
हम बढ़ चले
आधुनिकता की ओर।

फैशन का चश्मा लगा
उड़ान भरी
बाहरी दिखावे की तरफ
और दूर होता गया
हमारा गंतव्य
लड़खड़ा गये कर्त्तव्यों के डग।
मुक्ति का संघर्ष
हमे रास न आया।
और अब केवल
एक टीस उठती है
बूढ़ी खाँसी की तरह
उठता है
एक पछतावे का दर्द
जो पागल सा चिल्लाता है
हमें क्या हो गया ?
यह कैसे हो गया ?

□□□

विषम घड़ी

हर क्षण चाहता हूँ सर्वजन हिताय,
सर्वजन सुखाय।
सोचता हूँ
मेरे सुकृत से
कुछ जीवात्माएँ ऐसे ढल पाती,
कि वे मोह, स्वार्थ
भय, भ्रम के पाश
अपने कर्त्तव्य से काट जाती।
किन्तु
लक्ष्य के बीच दीवार बनकर
कभी माता-पिता
कभी पति-पुत्र
कभी भ्राता-मित्र
के रूप बनकर आते हैं।
पर महावीर वही है
जो इन सब बंधनों को
एक ही झटके से काटकर
सत्य की मंजिल हेतु
त्वरित कदम बढ़ाते हैं।

□□□

कभी-कभी

कभी-कभी
बड़े भी,
बुरे लगते हैं।
न जाने क्यों
वे तानाशाही
खूब करते हैं।
कोई वय से
कोई धन से
कोई मद से
तो कोई पद से बड़े कहाते हैं।
कभी-कभी
अनुशासन बनाने वाले
स्वयं
उसे तोड़ जाते हैं,
नियम बनाने वाले
स्वयं उसकी अर्थी उठाते हैं।
छोटों की गलती पर
अँगुली उठाने वाले, थोड़े से दोषों पर
आँखें दिखाने वाले
कभी-कभी
कुछ ज्यादा ही फिसल जाते हैं।

□□□

आज कुछ बदला हुआ हूँ

मैंने पूछा-
हे समीर,
कहाँ गया तेरा
शीतल, मंद, सुगंध से युक्त व्यवहार।
क्यों बदल गया आल्हादकारी
क्लांतिहर्त्ता
सुरभिमय विचार।
वह क्रांतिदूत पवन
हुँकारा
फुफकारा
और बोला-
कविवर,
क्या तुम नहीं देख पाते
भारती के साथ
भारतीयों की प्रतिबद्धता।
क्यों हर मन में
फैल गई है
अशुद्धता।
इसी कचरे को उड़ाने
आज मैं मचला हूँ।
देश के अवनति के गुब्बार को हटाने ही
मैं प्रचण्ड वेग से चला हूँ।

□□□

मैं सदा तुम्हारे साथ हूँ

साधक ने
अंत समय पूछा
धर्म !
तुम मेरे संग चलोगे ?
धर्म ने कहा-
जाना कैसा ?
मैं तो
सदा तुम्हारे साथ हूँ,
तुमने ही
मुझे विस्मृत किया।
कोई बात नहीं
अब मुझको
जानो
पहिचानो
स्वीकारो,
अंत समय
अंतस मय बन जाओ
और बना लो मुझे
अपने पथ का दिया।

□□□

आज का एकलव्य

मैंने
एकलव्य से पूछा
क्या आज भी
तुम्हारे जैसा
कोई है ?
क्या आज भी
तुम्हारे भाई हैं ?
एकलव्य ने कहा-
आज के शिक्षार्थी
मुझसे भी आगे हैं
मैंने तो
मांगने पर
गुरु दक्षिणा में
अंगूठा दिया था,
पर ये तो
बिन मांगे ही
अंगूठा दिखा रहे हैं,
और
उससे भी आगे
पंजा दिखाने की
योजना सिखा रहे हैं।

□□□

स्टोन कल्चर

आज का युग
रिटर्न टू स्टोन कल्चर हो रहा है।
हृदय कमल
मानवता से रहित
पत्थर दिल हो रहा है।
देश की प्रगति में
बाधक चट्टान बन गया है,
मिट्टी के पीछे
अज्ञानी
पत्थर हो गया है,
स्वार्थ की साधना में
कंकड़ बन गया है,
शांति-चिड़िया को उड़ाने
बन गया गुलेल है।
पत्थर, चट्टान, कंकड़
सब एक ही बात है
एक तरफ इन्हीं की रेलमपेल है।
पाषाण युग
तब भी था

अब भी चल रहा है।

आजादी से पूर्व कुछ मानवता

भारत में थी

अब युग

रिटर्न टू स्टोन कल्चर

के लिए

मचल रहा है।

□□□

मत लांघो तुम लक्ष्मण रेखा

जानकी-
मत लांघो लक्ष्मण रेखा
अन्यथा
दशानन से हर ली जाओगी,
असीम कष्ट पाओगी।
उल्लंघन में निहित हैं
लांछन
पश्चात्ताप, प्रताड़न
और निन्दा।
यह भुगतना ही पड़ता है
चाहे तुम हो,
सती हो या वृन्दा।
प्रत्युत्तर आया-
मैं लांघ गई
आवेग और अज्ञान में
गृहस्थ जीवन के सम्मान में
पर
आज क्यों जान बूझकर
लांघी जा रही हैं
अगणित परम्पराएँ ?
शील, विनय, मर्यादा
ममता, दया व
श्रृंगार की सीमा रेखाएँ।

□□□

पश्चात्ताप

पश्चात्ताप भी
मानव के जीवन में
अत्यावश्यक है
भोजन, पानी
प्राणवायु की तरह।
हो सकता है
यह पश्चात्ताप ही
हमारे पापों का
प्रक्षालन हो।
शायद
आत्मनिंदा ही
हमारी सफलता का
सोपान हो।
जिसको अपनी त्रुटियों पर पश्चात्ताप न हो
सही अर्थों में
वह मानव नहीं
दानव है।

□□□

चक्रव्यूह

अभिमन्यु
घुस गया चक्रव्यूह में
चक्रव्यूह भेदन में वह प्रज्ञ था
किन्तु
बहिर्गमन के मार्ग से
अनभिज्ञ था।
वह बालक
अकेला
शस्त्रहीन।
सात महारथी
रहे तान तीर
गर्वाधीन।
उस अधखिले कुसुम को
कर रहे विदीर्ण
कितना विरद
करुण क्लांत दृश्य था वह।
नन्हीं सी जान
कुसुमवत्
प्रहारों से लहुलुहान

घावों से वर वसन जीर्ण-शीर्ण।

मैं हो गया निर्होश

चिल्लाया बार-बार

रोको यह भयंकर प्रहार,

बन्द करो

अमानवीय संहार।

मैं बहुत फूट-फूट कर रोया

चिल्लाया

अरे दुष्टों!

कुछ तो शर्म करो

अपने ही वंशज पर

अपने ही शिष्य पर

ऐसा कुकृत्य!

वे दुष्ट

कुछ अट्टहासे

और बोले-

देखो-हमें उपदेश ना सुनाओ

जाकर अपने परिवेश पर

एक नजर डाल आओ

अरे हमारे हृदय तो करुणा संयुक्त हैं

कम से कम अभिमन्यु
पहियास्त्र युक्त है।
पर उन हजारों अभिमन्युओं को देखो
जिनकी माताओं के हृदय
ममता वियुक्त हैं।
देखों वहाँ तो होता है
गर्भ में ही क्रूर प्रहार,
गर्भपात रूपी
चक्रव्यूह में नरसंहार।
अनीति, फैशन
काम, क्रोध, भय
झूठी इज्जत और मान रूपी
सप्त महारथियों का
अमानवीय प्रहार
जिसे समर्थन दे रही है
निर्दयी विश्व सरकार।
यहाँ तो अभिमन्यु का पिता
हमसे प्रतिशोध लेगा
पर वहाँ तो

हर अभिमन्यु का पिता
भ्रूणहत्या करा
सरकार से प्रतिदान लेगा।
आज विश्व के हर कोने में
मचा है जीव संहार,
वो भी निहत्थे
अबोध मूक
गर्भस्थ मानव पुत्र का संहार।
जाओ पहले रोको
उनके
अमानवीय प्रहार
फिर हमसे करना तकरार
और मुझे नजर अंदाज कर
मेरी आखों के आगे
दुर्योधन, शल्य, कर्ण
कृपाचार्य, शकुनि, द्रोण
अश्वत्थामा
निहत्थे अभिमन्यु पर
करने लगे, वार पर वार।
वार पर वार।

□□□

सीताहरण

मैंने रावण से कँहा-

हे रावण

तुम बड़े निकृष्ट,

पापात्मा हो।

मानवता पर कलंक

दुष्ट अधमात्मा हो।

केवली से ली प्रतिज्ञा को,

आत्मोत्थान के सूत्र को तोड़ दिया।

कहीं और नहीं

अपनी ही तनुजा,

पर

खोटा भावभरा मन मोड़ लिया।

रावण ने कहा-

ठहरिए

मुझे कोसने से पहले

आज के युग में टहलिये,

देखिए

जहाँ मुख से

राम की जयकार की जाती है,

और कृति से
राम के आदर्शों की धज्जियाँ उड़ा दी जाती है।
राम के नाम पर
रोटियाँ सेंकीं जाती है,
राम के पुजारियों में
अधिकतर रावण, होते हैं।
हजारों सीताओं का
सती साध्वियों का
होता है अपहरण।
मैंने तो
एक छोटा-सा नियम ही तोड़ा था
परन्तु आज
अनेक नियमों
मर्यादाओं को तोड़
साधु के वेश में
रावण नजर आते हैं,
उन्हें रावण कहना भी
मेरा अपमान है
क्योंकि
मैंने तो सिर्फ

तिशोधवश

एक अबला का हरण किया था।

किन्तु अब

छद्म साधुता की आड़ में

निरंतर हो रहा है

एक नहीं, हजारों ललनाओं का

शील-हरण,

अधिकार-हरण,

प्राण-हरण।

□□□

कंस मामा

मेरी नजरों में
कंस बड़ा दुष्ट मामा था।
मामा क्या
भाँजों के लिये
मौत का हलफनामा था।
देवकी के
अबोध
नर शावक को
निर्दयता से पछाड़ रहा था,
आगामी मौत का द्वार
रोक रहा था
निर्दोष शिशु को घात।
मैंने कहा-
रे मूर्ख !
कुछ तो शर्म कर
इस नन्हें बहिनोते पर
कुछ तो रहम कर
यह नन्हा-सा बालक
अभी तो धरा पर आया है।
एक क्षण भी तो

माँ की गोद में

नहीं खेल पाया है।

और तू आ गया

यमराज बनकर,

खा रहा नन्ही सी जान को

काल बनकर,

वह कुछ रुका और बोला-

अरे

मुझमें तो फिर भी कुछ दया है

कम से कम यह बालक

गर्भ से बाहर तो निकल आया है,

परन्तु

आज अधिकतर पिता

कंस से भी बदतर हैं

जो

हजारों गर्भस्थों को

मौत के घाट उतरवा देते हैं

और उसका पुरस्कार

सरकार से लेते हैं।

और वह माँ

पूतना राक्षसी, हैवान है

नहीं-नहीं

उसे पूतना भी कहना पूतना का अपमान है,

जो माँ

गर्भ में ही

अपने लाल को मरवाती है,

और माँ शब्द पर

करारा तमाचा लगाती है।

उससे तो मातृत्व भी घबराता है,

आज तो उसका पुत्र

गर्भ से बाहर भी

नहीं निकल पाता है।

बताओ तो सही

वह कहाँ माँ की गोद में खेल पाता है।

□□□

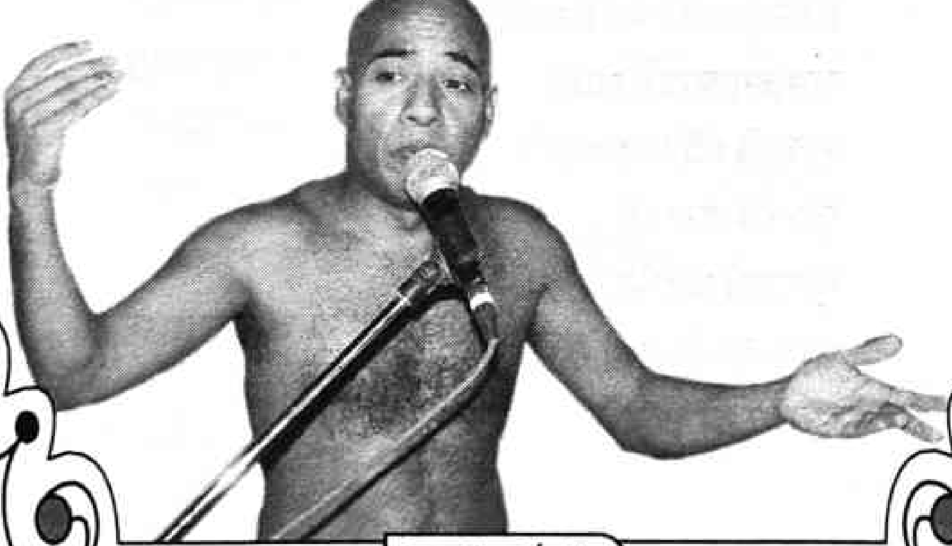

पूतना

हे पूतना
तुम्हारा पूत नहीं
इसलिए तुम
पूत-ना हो।
तुम्हारा पूत नहीं
इसलिए निष्ठुर हो।
यशोदा की खुशी
देखते न बनी
अपनी बंध्यता
दिखा ही दी
हरि पर ईर्ष्या
वर्षा ही दी।
पूतना ने कहा-
मैं तो बांझ थी
मुझे ईर्ष्या नहीं थी
मुझे तो कंस ने बताया था।
परवश हो मैंने
किसन को सताया था।
पर आज की नारी
मुझसे भी बढ़कर है
पूत पाकर भी
पूत को खो रही है।
पूत-ना हो रही हैं
पूतना हो रही है।

□□□

सीमा रेखा

सीता ने- कहा
मैंन तो
लांघी थी लक्ष्मण रेखा,
पर आज की नारी
शील की महिमा
नारी की गरिमा को
कर गयी अनदेखा
लांघ गयी सतियों की सीमा रेखा।
आज की नारी
सास को दास
पति को गुलाम बनायेगी
कुल को कलंक लगायेगी
लांघेगी कुल-शील की सीमा रेखा।
आज की नारी
गर्भपात करायेगी
अपनी गोद लुटायेगी
नारीत्व पर दाग लगायेगी
लांघेगी मातृत्व की सीमा रेखा।
आज की नारी
खूनी फैशन सजायेगी
पति का स्वेद बहायेगी
लाखों पशुओं का खून बहायेगी
पशुओं के शव से
स्वयं को सजायेगी
लांघेगी दया की सीमा रेखा।

खेल किसे कहते हैं ?

हे माँ !

मैं खेल खेलूँगा

मुझे बताओ

खेल किसे कहते हैं ?

क्या

पापा और तुम्हारी लड़ाई

खेल कहलाती है ?

क्या मेरी पिटाई

खेल कहलाती है,

क्या दीदी की

रूलाई भी खेल है ?

क्रीम पाउडर लगाना

और सिनेमा जाना

ये भी कोई खेल है ?

नाखून और ओंठों पर

खून सा कुछ लगाना

कौन-सा खेल है ?

पापा को तंगकर

चूड़िया लाना
फिर सबको दिखाना
कितना गंदा खेल है।
बूढ़ी दादी को
डाँट लगाना
उनको सताना
यह कैसा खेल है।
खेल तो
स्फूर्ति लाता है
सार्वभौम प्रगति कराता है,
जीवन में आनन्द
और
देश में
संगठन लाता है।
पर
इस खेल में तो मुझे
कुछ भी
मिलता
नजर नहीं आता है।

तुम से हटकर

अम्मा ! तेरी डांट से
सहम जाता हूँ,
तेरे प्यार में
चहक जाता हूँ,
तेरी मुस्कान में
खिल जाता हूँ।
तेरे ही अंग का हिस्सा
नन्हा-सा फूल हूँ मैं,
इस फूल की
यही आकांक्षा है
मुझे आँचल की छाँव में रखना,
ममता के गाँव में रखना,
कभी छिटक ना देना
सदा ही
तेरे स्नेह की छाँव में
मुस्कुराऊँगा,
दुनिया में महकूँगा,
किन्तु तुमसे छिटक कर
कुछ पल तड़पूँगा
फिर मुरझाऊँगा,
और अंत में विलीन हो जाऊँगा,
क्योंकि तुमसे हटकर
मेरा कोई अस्तित्व नहीं।

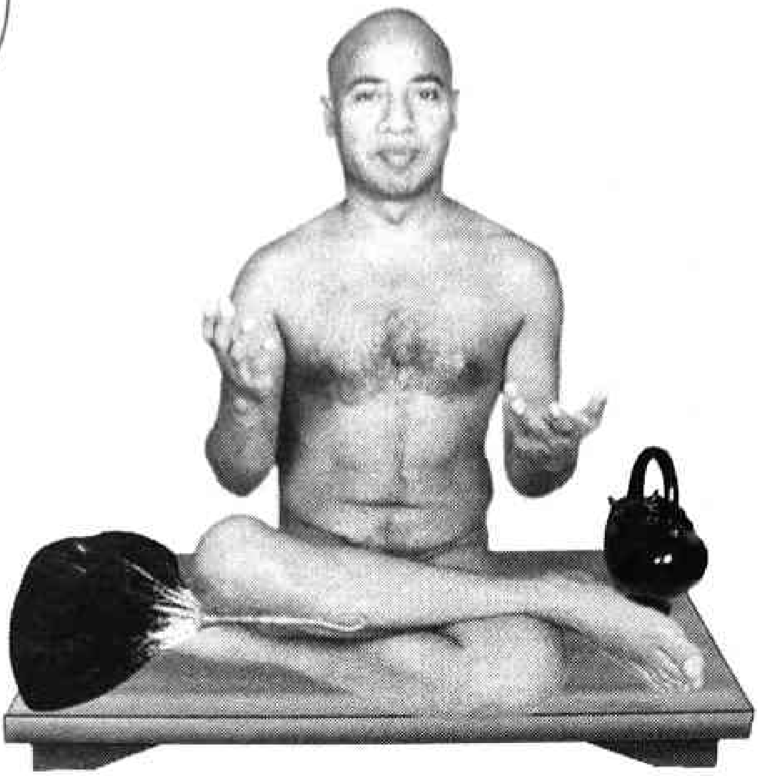

तुमने क्या दिया

हे भाई
माँ ने तो नवमास
तुम्हारे लिए कष्ट सहा था
पर तुमने क्या किया ?
माँ ने तो तुम्हारे लिए
संघर्ष किया था
तुम्हें हँसाने
आंसू पिया था।
तुम्हें सुलाने
वह
हर क्षण जगी थी

तुम्हें खिलाने
पानी पर पली थी।
तुम्हें रिझाने
दु:खों में पड़ी थी
तुम्हें पढ़ाने
दुनियाँ से लड़ी थी
तुम्हें बढ़ाने
किस्मत से भिड़ी थी
पर तुमने क्या किया ?
माना कि
वह उसका कर्त्तव्य था
पर
तुम्हारा भी तो
कोई कर्त्तव्य होता होगा
उस जीवनदार्त्री
पालनकत्री
मंगलमूर्ति
ममतामयी माँ के प्रति।
जिससे
सही अर्थों में / कहला सको
उस पिघलते ममत्वस्रोत
जननी, जगन्मात की संतति। □□□

प्रहार

सुरसा की तरह
बढ़ते जा रहे हैं,
आक्टोपस के समान
जकड़ते जा रहे हैं,
डायनासौर के जैसे
भिड़ते जा रहे हैं,
अजगर की मानिंद
निगलते जा रहे हैं लगातार,
मानवता को
मानव जाति को
दहेज
गर्भपात
शोषण
साम्प्रदायिकता
फैशन
वैषम्य
प्रतिद्वन्द्विता
अत्याचार
भ्रष्टाचार।
अब मैंने भी उठा ली है

ग्लम,

होते रहेंगे

वार पर वार,

जीवन के अंतिम क्षणों तक

करता रहूँगा

अन्याय, असत्य

अनैतिकता

अधर्म, अमानवीयता पर

रोज दर रोज

पैने व भीषण प्रहार।

❑❑❑

जिन्दगी

पेट के गड्ढे को पाटना
तलुए चाटना
अपने केक्टस का
पोषण,
पड़ोसी के आम का
शोषण,
दुर्गंध पोतना
सुगंध पोछना,
रोटी, कपड़ा, मकान
मनोरंजन
वासना
यही तो है
जिन्दगी।
फिर
कवि की उड़ानों से,
चिन्तन के मचानों से,
आचरण के फूल से,
गुरु-चरणों की धूल से,
कैसे हो बन्दगी ?

□□□

नेतागिरी

हे शकुनि
व्यर्थ में
भाई को भाई से लड़ाओगे
यूं ही
परिवार के टुकड़े कराओगे
कुरुवंश को जुआरी बनाओगे।
तुम्हारी करतूतें
भरी सभा में
शीलहरण करायेगी
वारणावत घटना करायेगी
सज्जन को वनवास दिलायेगी।
तुम्हारी धूर्तता
लाखों का खून बहायेगी
हजारों विधवाएँ बनायेगी
अनेक अनर्थ करवाएगी
भयानक तबाही भरा
महाभारत मचवाएगी।
उसने कहा हे साधो!
मुझे कोसने से कोई लाभ नहीं
मेरी शाखाएँ
बहुत लम्बी हो चुकी है,
ये अब सिमट नहीं पायेंगी।
ये सभी खूबियाँ
आज अनेक नेताओं में मिल जायेंगी। □□□

आबाद रहो प्रजा

आबाद रहो प्रजा
काटो गरीबी की सजा
पहले भी यही फिजा थी
अब भी वही सजा है,
अब और तब में
ज्यादा फेर नहीं है
बस समय का परिवर्तन है।
तब
राज तंत्र के घोड़ों से
कुचले जाते थे
अब
नेता की गाड़ी से
कुचले जाओगे,
तब बाणों से
बिंधे
अब बमों से
उड़ा दिये जाओगे,
तब राजा विभु थे
अब नेता महाप्रभु हैं,
पहले गरीबी
युद्ध की भगिनी थी

अब गरीबी
चुनाव की भगिनी है,
तब मौत
युद्ध की सजनी थी
अब मौत
चुनाव की सजनी है,
तब सेनाएं लूटती थी
अब हड़तालें बन्द और
साम्प्रदायिकता लूटती है,
तब विष पीकर मरे थे
अब मद्य पिलाकर
मार दिये जाओगे,
तब मुकुटों ने लूटा था
अब कुर्सी और वोट
लूटेंगे,
सदा मजबूर थे तुम
हे देशवासी
अब जागो
तभी तुम
दुःख से छूटोगे,
वरना आबाद रहो प्रजा
काटो गरीबी की सजा।

□□□

आज कान्हा रो रहा है

दूध दही की नदियों वाला देश
पशुवध गृहों के जाल में
उलझता ही जाता है।
क्षुद्र स्वार्थवश, करुणा को त्याग
क्रूरता अपनाता है।
भूख, गरीबी और अभावों में
मानव के कल्याण हेतु
पशुधन ने जो उपकार किए हैं
उनके बदले
हमने उन्हें
कत्लखानों में वार दिए हैं।
गोपाल के देश में
गो-पालन खो रहा है
हमारी क्रूरता देख-देखकर
लगता है कि
आज कान्हा रो रहा है।

□□□

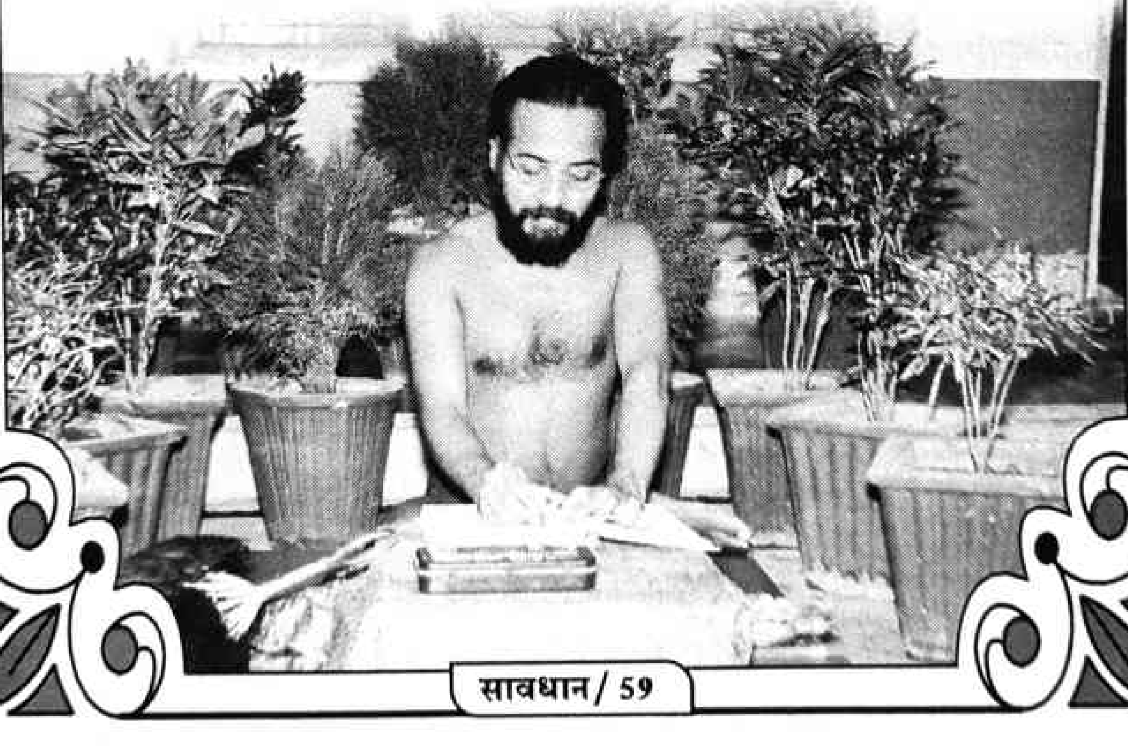

अलगाववाद

चारों ओर
बारूदी गंध
लपलपाते खंजर
निराश शहर
उजड़ती बस्तियाँ
और
हृदय विदारक चीत्कार।
राम-रहीम के नाम पर
भाई-भाई में
बढ़ती तकरार।
महावीर के सिद्धान्तों के बजाय
बंद है संवाद।
स्याद्वाद की जगह
पनप रहा एकांतवाद।
स्वार्थी
सींच रहे विष वारि
डाल रहे फूट की खाद,
इसीलिए
पनप रहा है
सम्प्रदायवाद
आतंकवाद,
अलगाववाद।

कान के कच्चे बनो मत

आँख
पलकों की ओट में हैं
ताकि
हम देख सकें
सुन्दरम्।
जिह्वा
ओठों से नियंत्रित है
ताकि

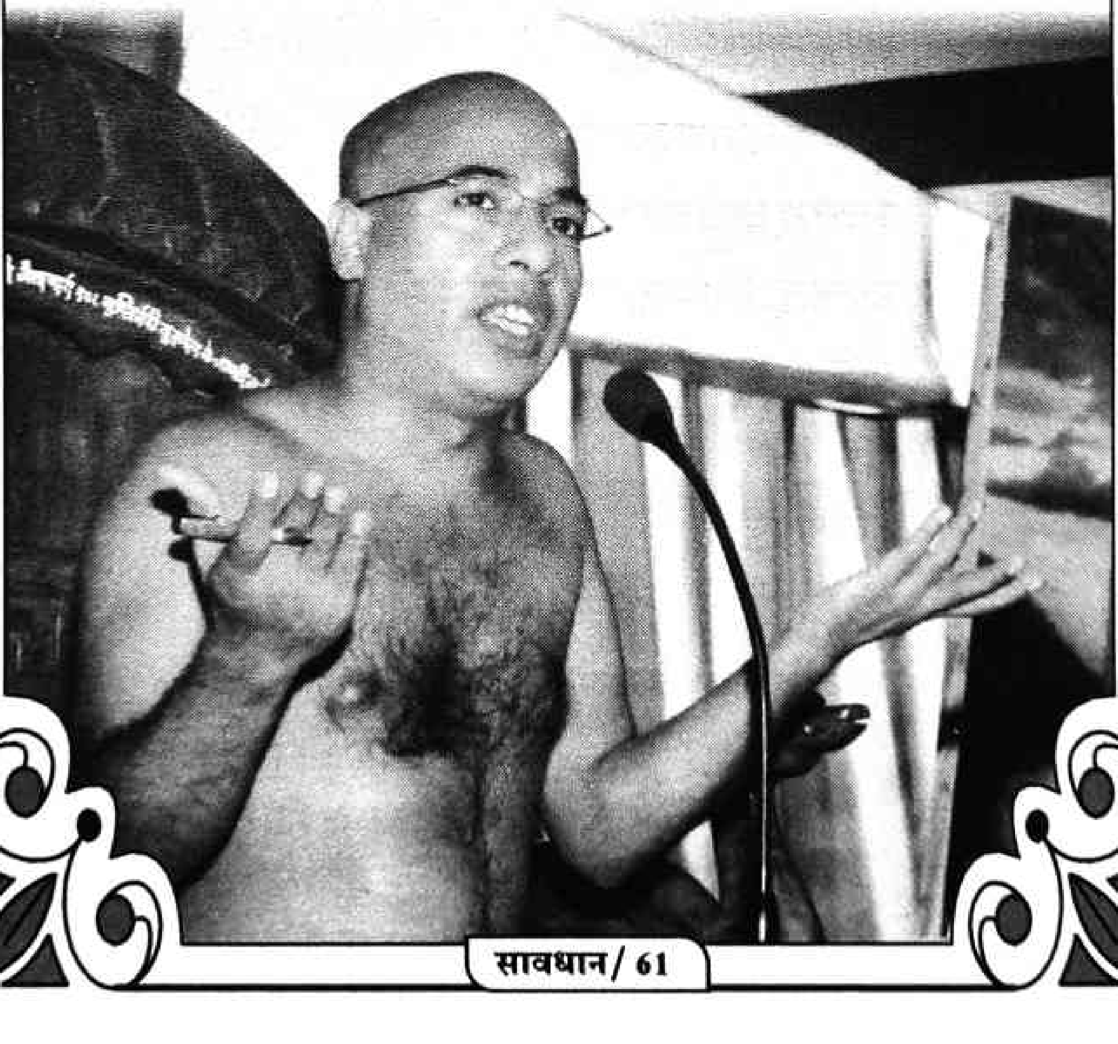

बोल सकें
शिवम्।
किन्तु कान!
न ओट में हैं न नियंत्रित
बस खुली सड़क है
सभी बातें
इसमें चली आती हैं
बेधड़क।
उपाय?
उपाय है
श्रुत को संयम कसौटी पर
ज्ञान से कसाना,
तर्क के आवरण से
सत्यम् लसाना।
सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम् के
सम्मिश्रण से कम
चुनो मत।
इसीलिए
कहता हूँ
कान के कच्चे बनो मत।

□□□

आतंकवाद या शांति

ठीक से सोचो और समझो
तुम्हें जाना है किस ओर ?
इधर आतंकवाद उधर शांति
रे पथिक !
तुम्हें जाना है किस ओर ?
इस ओर ?
या उस ओर ?
यहाँ तो है हमेशा
आदर, सम्मान
इज्जत, शोहरत
स्वतंत्रता, सफलता का
ऊँचा सिंहासन।
किन्तु उस ओर
अभावों, मुसीबतों
दुःखों, पापों
तानों
वैधव्य, विरह
परावलम्बन, पराश्रय
बन्धनों से भरी खाइयाँ।
अब देखो
तुम्हें क्या पाना है ?
और
चुन लो अपना रास्ता।

□□□

तुम्हें भारत याद करें

आओ
लक्ष्मीबाई
रणचंडी
तुम्हें जन-मन बुलाता है।
आज नारी
बंधक बनी है
भ्रष्टाचार
अत्याचार
स्वार्थ
व पापाचार
उससे चँवर डुलाता है।
बालाएँ
जो संभावनाओं की आहट हैं
उनकी
भ्रूण हत्या होती है।
मातृत्व लज्जित है
सभ्यता, दया
गौरवशाली परम्परा
अपना अस्तित्व खोती है।
आज तुम सी
वीरांगनाएं चाहिए
जो रूढ़ि व प्रमाद हरे।
आओ भारत की दुलारी
तुम्हें
भारत याद करे।

□□□

भारत की प्रगति

शताब्दी वर्ष में
नेताजी ने पूछा
मेरा भारत
कहाँ तक प्रगति कर पाया
वहाँ
क्या हो रहा है ?
मैंने कहा, कुछ न पूछिए
सारा देश
आपसे विमुख हो रहा है।
आपके सिद्धान्तों का जनाजा निकल रहा है।
आपने
आजादी का पथ दिखलाया था
परन्तु अब यहाँ
गुलामी के गलियारे बन रहे हैं,
आप तो राष्ट्र सेवक थे
अब नेता राष्ट्र-भंजक हैं
आप राष्ट्र नायक थे
अब नेता खलनायक हैं।
आपने राष्ट्र के लिए
भोगों को त्यागा था,
अब भोगों के लिए वे

राष्ट्रीयता को त्याग रहे हैं।
आपने विदेशियत
और विदेशी वस्तु का
बहिष्कार किया था
किन्तु अब भावना कैसी ?
नेता भी विदेशी
पैसा भी विदेशी
साधु भी विदेशी
उद्योगपतियों में भी
देशद्रोह की बू है।
हे राष्ट्रनायक
हे भारत के निर्माता
हे वीरों के वीर
सुभाषचन्द्र बोस,
तुम्हारे सपनों का भारत
चकनाचूर हो रहा है
अब तो हवाले की हवा चल रही है,
दिखावे की दवा चल रही है,
राष्ट्रीयता मिट रही है
आपके विचारों से विपरीत
भारत की प्रगति
दैनंदिन घट रही है।

□□□

भारत माँ की पुकार

भारत माँ ने
पुनः पुकारा
हे आजाद हिंद फौज के नेता,
हे सुभाष,
जहाँ कही भी हो
फिर से आजाओ।
तुम्हारी भारत माँ की
लाज बचाओ।
देश के दुश्मनों को
सबक सिखाओ।
पहले तो एक कम्पनी ने
गुलाम बनाया था
अब अनेक कम्पनियाँ
फिर से
गुलाम बना रही हैं।
नित नए प्रतिष्ठान
और
प्रस्ताव लेकर आ रही हैं।
मुझे मिटाने के लिये
अनेक दल बन गये हैं,
अब मेरे सपूतों को
देश के शहीदों को
डाकू कहा जाता है।

मेरी रक्षा के लिए
देश के गद्दारों को
चुना जाता है।
जिन्होंने तुम्हें गालियाँ दी थी
अब वे ही
तुम्हारे नाम पर
वोट बटोरते हैं
तुम्हारे सिद्धान्तों की
हत्या करते हैं।
तुम्हारे त्याग की
शहीदों के बलिदान की
भावना को दगा दिया है।
शील मेरी पहचान थी
उसमें भी धब्बा लगा दिया है।
हे राष्ट्रनायक,
हे मेरे सपूत,
सुभाष चन्द्र बोस,
माँ की दुर्दशा पर
तरस खाओ।
इन तस्करों से
इन हत्यारों से
देश के गद्दारों से
मुझे बचाओ,
विलम्ब ना करो
तुरन्त चले आओ।

□□□

अधिकार सबका है

एक अकेला नहीं

अनेक से मिलकर बना है।

एक के बनने में

मसि उद्योग

कागज मिल

पेन

फैक्ट्री

देश का धन

इन्जीनियर की बुद्धि

कृषक का पुरुषार्थ

मजूदर का श्रम

अमूल्य समय

गर्मी का ताप
वर्षा के थपेड़े
सर्दी की सिहरन
खून और पसीना
सभी कुछ लगा है।
निष्कर्षत:
सब एक के
एक सबका है।
एक अमीर के बनने में
करोड़ों की गरीबी
लाखों की भूखमरी
हजारों की बेरोजगारी
सैकड़ों की हत्याएँ
अनेक मौतें
किसान का संघर्ष
पशुओं का परिश्रम
मजदूरों की मेहनत
पर्यावरण का प्राणोत्सर्ग
सभी कुछ लगा है।
फिर वो अकेला धनी कैसे ?
धन तो सबका है
अधिकार तो सबका है।

□□□

भारत की सीमा रहे वही

नक्शा फिर से तैयार करो,
भारत की सीमा रहे वही।
जिसमें ना पाकिस्तान रहे,
बंगला, बर्मा का नाम नहीं।
भारत क्या रोटी का टुकड़ा,
जिसका हर कोई खण्ड करे ?
भारत क्या वह अपराधी है,
जिस पर मनमाना दण्ड चले ?
भारत माता क्या अबला है,
जिस पर हो अत्याचार सदा।
या मूक, निरीह उसे माना,
जिस पर सादा संसार लदा।
हो चुका बहुत, अब देर नहीं,
भारत की गरिमा रहे वही।
नक्शा फिर से तैयार करो,
भारत की सीमा रहे वही॥
भारत माता वह माता है,
जिसके बेटे हैं लाल-पाल
बेटे जिसके टैगोर, तिलक,
राणा सांगा और छत्रसाल।
जिस पर ऊधम से फूल चढ़े,

आजाद भगत से वीर खड़े।
जिस पर न्यौछावर हैं सुभाष,
अरविन्द, राम से पूत बड़े।
फिर क्यों नैनों से धार बही
अब देर नहीं अब देर नहीं।
नक्शा फिर से तैयार करो,
भारत की सीमा रहे वही॥
जिसकी रक्षक झाँसी रानी,
न्यौछावर है हाड़ी रानी।
जिसकी सेवा पन्ना करती,
जीजा सीता जनमा करती
जिस पर रत्ना सी कली चढ़ी,
कई पद्मनियों की बलि चढ़ी।
चट्टान अहल्या रानी है,
दुर्गा जैसी क्षत्राणी है।
फिर भी माता ने पीर सही,
अब देर नहीं अब देर नहीं।
नक्शा फिर से तैयार करो,
भारत की सीमा रहे वही॥
जिसके गौरव राधाकृष्णन्
जिसके भूषण रामानुजन।
जहाँ खुदीराम से हथगोले,

अश्फाक हिन्द की जय बोले।
जिसके भाले राणा बनते,
बरछे भी छत्रपति बनते।
चापेकर जिसके हार बने,
गंगाधर जी तलवार बने।
फिर क्यों माता लाचार रही,
अब देर नहीं अब देर नहीं।
नक्शा फिर से तैयार करो,
भारत की सीमा रहे वही॥
जागो जागो मेरे वीरों,
बन जाओ युग के रणवीरों।
फिर से युग का निर्माण करो,
हर मानव का कल्याण करो।
माता जो सोने की चिड़िया,
ना कहलाये घायल चिड़िया।
माता के सम्मुख शपथ करो,
इसके कण-कण को सुखद करो।
इतनी क्यों अब तक देर रही,
अब देर नहीं अब देर नहीं।
नक्शा फिर से तैयार करो।
भारत की सीमा रहे वही॥

□□□

मुर्गी का अण्डा

मान्यता के मुद्दों को
भटकाने वालों,
प्रश्न यह नहीं है
कि अण्डा
शाकाहार है या मांसाहार।
सच तो यह है कि
अण्डा है
एक माँ का हृदय
उसकी ममता का चित्र,
उसकी धन्यता,
और
उसके गले का हार।
मानाकि
तुम्हारी भावनाएँ सुप्त हैं
तुम नहीं मानते संवेदनाएँ,
किन्तु
अनायास ही क्यों उठा रखा है
क्रूरता का झण्डा।
ठीक से सोचो
निष्कर्ष यही है
किसी भी दृष्टि से
खाद्य नहीं है
मुर्गी का अण्डा।

□□□

मौत की एक चाल

अतिवृष्टि
मौत की एक चाल है।
इसका प्रारम्भ
चिन्तातुर मानव को
आह्लाद देता है,
चिन्ता हर लेता है।
पर
धीरे-धीरे यह
अपना असली रूप बताती है,
फिर पसरती
बस पसरती चली जाती है।
और
इसके शिकार होते हैं
किसान, जन-वन,
और उमंग भरे मन।
सबको
विध्वंस की भेंट चढ़ा
मदमस्त हो पुनः चली जाती है,
दुनिया तो
बस देखती रह जाती है।
अगले वर्ष फिर यही हाल है।
क्योंकि अतिवृष्टि मौत की एक चाल है।

□□□

तिजोरी

तिजोरी में कैद है
दहेज की आग में
झुलसी चीत्कार
मजदूर का पसीना
किसान के आँसू, भूख
गरीबों का विश्वास
मानवीय संवेदनाएँ
और
न जाने गुनाह कैसे-कैसे
जबकि
तुम्हें दिखते हैं
सिर्फ पैसे!

□□□

पतंग

आकाश में
उन्मुक्त विहार करती पतंग
नाप आयी
सूरज
चाँद
तारे।
उसे पता तक न था
कि उसे उठाने में
कितनी चकरियों
कितनी डोरों
कितने हाथों ने
अपने प्राण वारे।

□□□

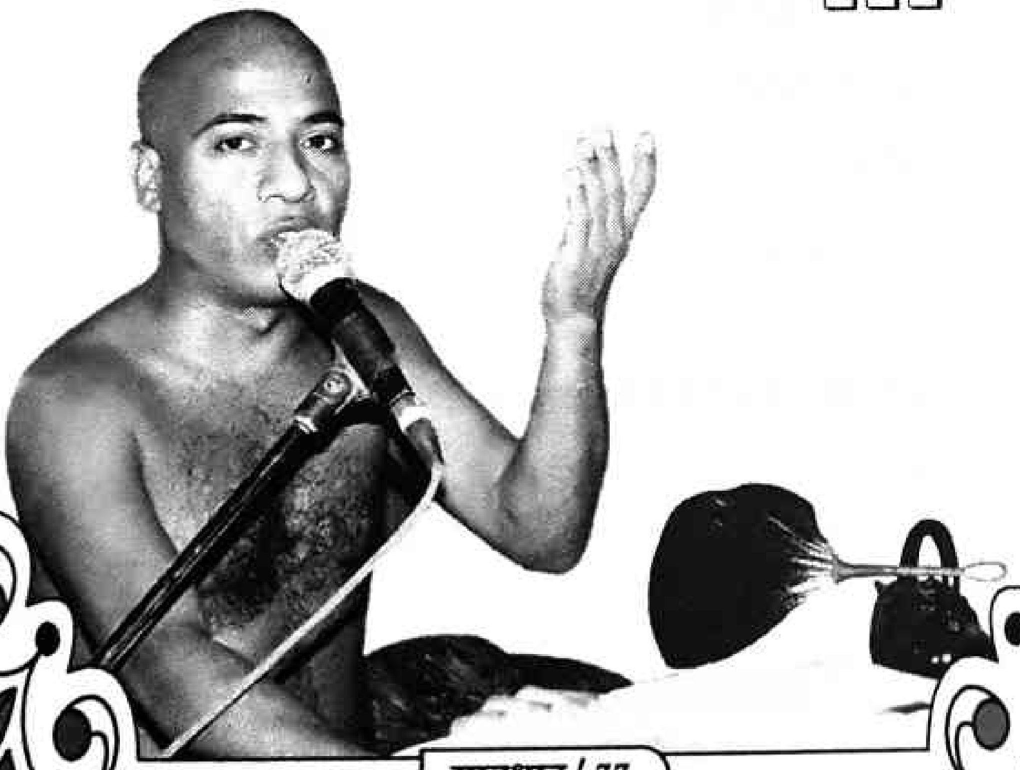

कलम

मैंने लिखे थे
अनगढ़ इतिहास
कहा था
दिन को रात
और रात को दिन
मैंने नापा था
कल्पना लोक
जो यथार्थ के धरातल से
था
दूर बहुत दूर।
करनी पड़ी थी
मुझे
सत्य की हत्या
झूठ की सुरक्षा
क्योंकि
मैं हूँ कलम
सशक्त
चालाक हाथ में फँसी कलम
ताकतवर किन्तु मजबूर।

□□□

भ्रष्टाचार

नागराज
तुमने छोड़ दी थी केचुँली
पर
नहीं छोड़ा था विष दंश।
अपने दंश से
लील लिए थे तुमने
गाँव
चौपाल
पनघट
और पंचायत।
नैतिकता
सौहार्द्र
सच्चाई
कोई भी तो नहीं बच पाया
तुम्हारे दंश से
सब जगह
छितरा दिए थे
तुमने भुजंगी अण्डे
जिन्होंने जन्माए सपोलिए।
तब किसी ने
मेरी बात पर, कान तक नहीं दिया
वे ही अब बैठे हैं
सत्ता, समृद्धि
व विकास के पथ पर
बनकर बिचौलिए।

□□□

कुर्सी

तुमने
तोड़ दी कुर्सी
महज लकड़ी समझकर
तुम्हें नहीं दिख पाई
उससे जुड़ी संवेदनाएँ,
परिश्रम की सरगम,
संरचनात्मक सृष्टि।
तुमने
अनजाने ही नष्ट कर दी
एक मूक साधनारत
परोपकारी दृष्टि।

□□□

कुआँ

कुआँ
अब हो गया बूढ़ा,
यहाँ
कभी आता था
देशी-विदेशी पक्षी-समूह
पनिहारियों का दल
और
कोई प्यास का मारा।
लगा था
पास में बगीचा
देता था सुवास
महकता था
वातावरण सारा।
अब
कुआँ पट गया है
बगीचे में उग आये हैं
इमारतों के जंगल।
और वहाँ आने लगे हैं
निर्लज्जता
भ्रष्टाचार
अनीति और अमंगल।

□□□

रोड़लाईट

बिजली के खंभे से
बंधुआ मजदूर सी लटकी
यह रोड़लाईट ही
मेरे कथन की चश्मदीद गवाह है।
इसने देखा था
मानवता का खून
इसी के नीचे गिरी थी
नैतिकता की लाश
यहीं हुआ था
शील का सौदा
लज्जा का हरण
यहीं
भूख से बिलखा बच्चा
मुँह मार रहा था
माँ के सूखे स्तनों में
और माँ ने रचा था
उसे दूध पिलाने का स्वांग।
भूख से चक्कर खाकर
यही गिरी थी
देह शोषण की शिकार

कोई माधवी
जिसका चेहरा
सभी ने
जी भरकर देखा था
परन्तु
नहीं देख पाये
पीठ से चिपका पेट।
इसी के नीचे लगा था
छूट्टन की तीन पत्तियों का जुआ
जिसमें दांव पर लगे थे
आसपास के इलाके के बच्चों के भविष्य
और
दो जून की रोटी का बन्दोबस्त।
यहीं पर
रंगबिरंगी बोतलों के नीचे
दब गयीं
घर परिवार की खुशियाँ
और गली बन गई
जीता जागता मरघट।
यहीं रोया था किसनू
चन्द किताबों के लिए
और किताबें ?

चने की पुड़ियाँ बन
बिक गईं बाजार में।
इन सबकी गवाह
यह नुक्कड़ की रोड़लाईट है।
परन्तु
जमाने के झोंकों से
यह भी टिमटिमाने लगी है,
कीट पतंगों को खाकर
मुटियाने लगी है।
मुझे आशंका है
अब बदल जाएँगे इसके बयान
और बदल जाएगा
मेरा एक मात्र गवाह।

□□□

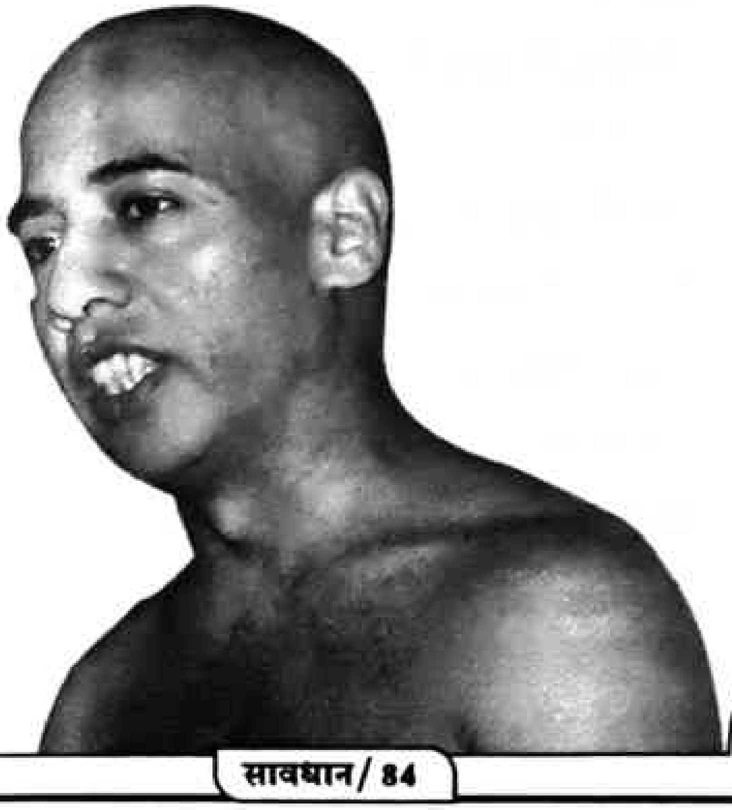

जादूगर

जादूगर
काँच की किरचों पर नाचा
उसने
ट्यूबलाइट चबाई
ब्लेड निगली
मुँह से
आग उगली
रस्सी पर
चलकर दिखाया
और दिखाए
वाटर पोट,
पानी का दूध
रस्सी से छड़
राख से नोट।
लेकिन
नहीं दिखा पाया
वे खेल
वह करामाती जादूगर
जिसमें
सभी के पास हो
भूख का इलाज

मर्यादा का आवरण
सिर पर छप्पर।
उसके पास
नहीं था
वह जादुई प्रबन्ध,
जिसमें हो
सुख
शान्ति
आनन्द
और
दिल से निकली
हँसी की
मीठी सुगन्ध।
क्योंकि
इनके लिए चाहिए
संकल्प
और यथार्थ
जो जादू से नहीं
बाजू से आते हैं,
इनके आने से
हर काम
जादू बन जाते हैं।

□□□

दिवाकर

दिवाकर,
दिन भर तुम्हारा तमतमाना,
और सुबह-शाम
क्षितिज पर
उछलते-कूदते
खिलखिलाना,
मुझे दोनों ही भाते हैं।
क्योंकि -
दोनों ही
मौत के अंधकार को चीरकर
जीवन की
परम ज्योति जलाते हैं। □□□

सावधान

मैं दु:शासन से बोला-
अरे दुष्ट!
बन्द कर ये दुष्कृत्य
रोक दे
द्रोपदी का चीरहरण।
अरे पामर!
कुछ भीम से डर।
रे नीच दुर्योधन
छोड़ दे अब तू
अपनी जंघा ठोकना
भीम के हाथों तेरी जंघाएँ
यूँ ही टूट जाएगी,
द्रोपदी की आह
तुझे अकाल में खा जाएगी।
एक दिन वो
तेरे अनुज की छाती के खून से
नहाएगी,
लहु से रक्तिम केश का
जूड़ा सजाएगी
ध्यान रखना
तेरी माँ
वरदान से भी
तुझे नहीं बचा पाएगी।

वे दोनों बोले
जनाब
चारों तरफ नजर घुमाइए
आज घर-घर में
दुःशासन, दुर्योधन है
जो निरन्तर
हजारों द्रोपदियों का
करते हैं खुले आम
चीरहरण।
साथ में होता है
खालहरण-मालहरण
करुण क्लांत जानहरण।
बताओ
अनेक
द्रोपदियों का चीर
कृष्ण आज कैसे बढ़ायेगा,
कब तक कितनों की खाले चढ़ायेगा,
कितनी द्रोपदियों में
पुनः जान लायेगा॥
और अब तो
चुपचाप बिठा दो भीम को
कितने दुःशासनों का खून पी पायेगा।
जंघाएँ ढूंढते-ढूंढते
स्वयं उसकी जंघाएँ
परास्त हो जायेंगी

और दुर्योधन की जंघा
बिना वरदान ही बच जायेगी।
फिर वे दोनों शेखी से बोले
अरे जब पितामह भीष्म
नीति निर्माता विदुर सुधीर
गुरु द्रोणाचार्य परमवीर
कृपाचार्य धर्मवीर
सभी यहाँ बैठे हैं,
तब तुम क्यों
व्यर्थ में करते हो चिंतावरण।
आओ
तुम भी देखो चीरहरण।
मैंने कहा- सावधान
कुछ दिन और खैर मनाओ
जहाँ उत्पत्ति है
वहाँ विनाश निश्चित है,
द्रोपदियों के लिए
हजारों कृष्ण आयेंगे,
प्रत्येक दुःशासन के लिए
भीम को लायेंगे
और बदला
गिन-गिन कर चुकेगा।
वह दिन दूर नहीं जब
तुम्हारा अपराधी सिर
द्रोपदी के कोमल-चरणों में झुकेगा।

सावधान भाग-II

(आचार्यश्री गुप्तिनन्दीजी की कवितायें)

शशि तुम्हें ग्रहण क्यों लगा?

हे तारेश! हे शशि
तुम्हें ग्रहण क्यों लगा?
हे शान्त सोम!
तुम्हारी सौम्य आकृति
आज यूं म्लान कैसे हुयी
जो कुछ भी घटा तुम्हारे साथ
अच्छा नहीं घटा
वह सौम्य मुख सोम
निशिगामी चन्द्र
कुछ हमसे यूं बोला
नहीं जो कुछ हुआ
अति उत्तम हुआ
जरा कुछ सत्य सिद्धांत जानो
तनिक आगम को देखो
पूर्व घटनाएँ स्मृत करो
सदैव विनाश
नवीन उत्पत्ति के लिए होता है

सदैव व्यय
उत्पाद पूर्वक होता है
क्रांति शांति के लिए होती है
संघर्ष
सफलता के लिए होता है
त्याग उन्नति हेतु होता है
स्वर्ण की तपन
निखार के लिए होती है
सही साधु का तप
सुख शान्ति हेतु होता है
तनिक विश्राम
अधिक काम हेतु होता है
रवि ग्रहणोपरान्त
और अधिक चमकता है
जिस पर आपत्ति आती है
जो संघर्षों का साहस युक्त
सामना करता है
वही महान् बनता है
तथैव यह ग्रहण भी
बुरे के लिए नहीं
प्रत्युत अच्छे के लिए होता है।

□□□

महाभारत

देवकी

वासुदेव

कंस

कृष्ण

जेल

महाभारत

आज भी तो है विद्यमान

सर्वत्र

बदलते गये हैं। बदलते जा रहे हैं

मात्र

पात्र

केवल पात्र

□□□

कहानी के पात्र

गुरु
शिष्य
आदर
विनय
सेवा
अनुशासन
लगन
परीक्षा
अब मात्र
कहानी के पात्र। □□□

पंखा

अपने डैने फैलाकर
प्रतिघण्टा
चालीस किलोमीटर के
तीव्र वेग से
चल रहा था
पंखा।
दिन
महिनों
वर्षों
युगों की
अनवरत साधना
किन्तु
रहा वहीं का वहीं
क्योंकि उसे
हो गया था
निरर्थक भ्रम
चलने का
कुछ करने का
विद्युत के सिमटते
मिट गया
उसका भ्रम।

□□□

माँ

वह
नहीं थी कालीन
जो सदा होती रहे
पद दलित
नहीं थी
वह बिस्तर
जिसका उपभोग
हो सर्व सुलभ
और
ना ही
खच्चर
जिस पर
लादा जायें
अनचाहा बोझ
नहीं थी
वह गैस
जो जलती रहे
अनवरत दुर्गंध के साथ
वह थी
माँ!
एक पुत्र
कवि
शिल्पी
मुनि
शहीद की आराधना

□□□

फुटबाल

तुम्हारी नियति
बन गयी है
फुटबाल की तरह
जिसे लगते हैं
किक पर किक
दोनों ओर से
किक
खिलाड़ी
करते हैं
जिससे गोल
पाते हैं
पुरस्कार
परन्तु
तुम्हारा सदा से
होता है
तिरस्कार!

❑❑❑

मैं आदमी हूँ ?

लोग कहते हैं
मैं आदमी हूँ
परन्तु मैं ढोता हूँ
गधों सा बोझ
मेरी होती है
कुत्ते सी पूंछ
और निभानी पडती है
वफादारी
सदा से हुआ है
गायों सा दोहन
मेरी
सद्‌भावना के दूध में
साम्प्रदायिकता की
खुनी पत्ती डालकर
बना दी जाती है
दंगों की चाय
जिसे पी जाते हैं
पण्डित और मौलवी
फिर सियासी छन्नी

छान लेती है

अवशिष्ट मानवता

और

राजनीति का

चमत्कारी डंडा

बना जाता है

मुझे उल्लू

फिर भी

लोग कहते हैं

मैं आदमी हूँ।

□□□

झांसी की रानी का बलिदान

झांसी की रानी लक्ष्मीबाई वीरों में आदर्श थी।
चूलिका स्वातन्त्र्य की मूर्ति वह संघर्ष की॥

अपनी प्रजा का पुत्र सम उसने सदा पोषण किया था।
दुर्बल फिरंगी को भी उसने पुत्रवत् जीवन दिया था॥
राष्ट्र की मुक्ति से आगे और कुछ उसने न चाहा।
पशु भी गुलाम उसने कभी बनाना ना चाहा॥
रानी थी भण्डार पूरी दया और दुलार की।
चूलिका...

प्रबल शक्ति पुंज नारी विश्व को उसने जताया।
संघर्ष का प्रचण्ड ज्वार नारी है उसने बताया॥
त्याग और बलिदान में नारी किसी से कम नहीं है।
राष्ट्र हेतु यातनायें झांसी की रानी ने सही है॥
नारी शिक्षा की वह रानी प्रेरणा स्तंभ थी।
चूलिका ...

मुक्ति के संग्राम में वह सबसे आगे हो लड़ी थी।
शत्रुओं के सामने चट्टान सम होकर खड़ी थी॥
राष्ट्र स्वाभिमान उसमें कूट-कूट कर भरा था।

हर एक क्षण जीवन का उसने राष्ट्र को अर्पित किया
राष्ट्र के उन्नायकों में अमिट दृढ़ स्तंभ वह थी।
चूलिका...

स्वाधीनता की सांस हेतु मृत्यु को सखी बनाई।
पदवियां दासत्व की उसे कभी न रास आई॥
देश के कल्याण में सहर्ष अपना सिर चढ़ाया।
नेता कहते हैं किसे यह अपने जीवन से बताया॥
वह थी एक वीरांगना जिसकी कमी सदियों खलेगी।
चूलिका...

हम भी अब निःस्वार्थ हो सेवा को निज कर में बसाये।
राष्ट्र स्वाभिमान का वह दीप तन मन में जलाये॥
दिल में हो उदारता और शांतिपथ सबको दिखायें।
बलिदान का अवसर मिले जब अपना सिर पहले चढ़ायें॥
उसी पथ बढ़ते चलो श्रद्धांजलि वीरांगना की।
चूलिका...

□□□

राणा प्रताप

राणा सा दीवाना कोई आज इस युग में नहीं है।
एकता अखण्डता बलिदान का दीपक नहीं है॥
राणा ने कष्टों को सहकर देश की भक्ति जगाई।
खण्ड खण्ड देश में अखण्ड ज्योत्सना जलाई॥
बुझे हुए खून में प्रचण्ड ज्वार उबल आया।
वीर निज सुता को उसने भेंट राष्ट्र के चढ़ाया॥
उसके जैसा राष्ट्र प्रहरी आज इस युग में नहीं है।
एकता...

राणा प्रताप शेर था वीरों में कोहीनूर था।
राजपूतों में अकेला एक सच्चा शूर था॥
आराम ऐश छोड़कर जंगल में था जीवन बिताया।
परिवार वैभव धन व जीवन देश के हित में लुटाया॥
नि:स्वार्थ सच्चा राष्ट्र सेवक उसकी अब तुलना नहीं है।
एकता...

पानी में गुजर करा बंधन उसे ना रास आया।
दिल्ली के दरबार भी उसे कभी न पाश पाया॥
हर एक कण उसके लहू का राष्ट्र हित में भेट हुआ।
निज मातृ भूमि का वह सच्चा वीर नायक सिद्ध हुआ॥
राणा प्रताप सा निडर महावीर इस युग में नहीं है।
एकता...

स्वार्थ हित उसने कभी न किसी को क्षण भर सताया।
शत्रु भी आया निकट तब प्रेम से सीने लगाया॥
छलकपट विश्वासघात शत्रु से भी नहीं किया।
राष्ट्र का उत्थान हो इस हेतू जीवन भेंट किया॥
वैसा उदार वीर नायक आज इस युग में नहीं है।
एकता... □□□

आज कान्हा रो रहा है

भारत की गलियों मे देखो आज कान्हा रो रहा है।
आज का मानव ही देखो क्रूर हिंसक हो रहा है॥
भूख से बिलखे हृदय को क्षीर दे जिसने जलाया
शुरु से ले अंत तक जिसने मनुज का संग निभाया
मनुज ने निज पुत्र सम जिससे सदा वरदान पाया
उसी गौ को कत्लखाने एक दिन खुद बेच आया
गौओं की आंखों से देखो आज कान्हा रो रहा है।
भारत...

सुस्त और निर्बल हृदय में चेतना जिसने जगायी
हिन्द की पावन धरा पर दूध की नदियाँ बहाई
दूध की शक्ति से जिसके राष्ट्र में स्वातंत्र आया
उस धरा पर गाय ने भूखा तड़फता अंत पाया
कट रहे पशुओं में देखो आज कान्हा रो रहा है।
भारत...

पशु सेवा भी धरम यह कृष्ण ने उपदेश दिया
दूध के बदले पशु को देव सा सम्मान दिया
उस कृष्ण पार्श्व का पुजारी क्रूरता पर उतर आया
पशुओं की सेवा के बदले कत्लखाने बेच आया
बिक रहे पशुओं में देखो आज कान्हा रो रहा है।
भारत...

□□□

माता-भाग्य विधाता

माता तुम जग की माता हो मानव की भाग्य विधाता हो।
तुम संघर्षों का प्रतिरूप तुम नेह प्रेम अभिलाषा हो॥
तुमने ही वीर सुभाष दिये, मुक्ति के प्रबल प्रयास दिये,
तुमने ही गांधी खुदीराम, राणाप्रताप अश्फाक् दिये।
लक्ष्मी, सीता, पन्ना हांडी रत्ना जैसे अंगार दिये,
ब्राह्मी सुन्दरी चन्दन, राजुल, समता मय संत विचार दिये।
है कौन मूर्ख शठ पाखंडी जो तुमको ना अपनाता हो॥
माता...

सुकुमाल, सुकौशल, कुन्दकुन्द, अकलंक ज्ञान भंडार दिये,
फिर पूज्यपाद व मानतुंग भक्ति प्रसून उपहार दिये।
महावीर, राम, गौतम, नानक, करुणा के पैरोकार दिये,
तुमने मुनि, गणधर, तीर्थंकर अवतार अनेकों बार दिये।
तुम ही तीर्थंकर धर्मचक्र अध्यात्म बोधि पथ दाता हो॥
माता...

हर नारी अब संकल्प करे हम स्वाभिमान जगायेंगे,
अब गर्भपात अब्रह्म छोड़ ममता की लाज बचायेंगे।
अब शीश कटे तो कटजायें पीछे ना पैर हटायेंगे,
तप, त्याग, शील, संयम धरकर, नारी क्रान्ति ले आयेंगे।
तुम संयम की अभिनव ललाम, तुम दया धर्म सुख दाता हो॥
माता...

□□□

(गणिनी आर्यिका राजश्री माताजी की कवितायें)

शारदे वंदना

शारदे माँ तार दे तू ज्ञान की फुहार दे।
अपनी कृपा से मेरा जीवन संवार दे॥
नाना भाषा वाली मात स्याद्वाद अनेकांत।
भक्ति और ज्ञान से मुझको निखार दे॥
वीणापाणि हंसवाही सब रूप कला धारी।
वाग्वादिनी माँ मोह तम को निवार दे॥
ऋषि मुनि तुम्हें ध्यायें ज्ञान रूपी ज्योति पायें।
'राजश्री' को अम्बे केवलज्ञान उपहार दे॥

□□□

क्यों मुझको वन छोड़ रहे हो ?

मैं सीता प्रभु राम तुम्हारी,
क्यों मुझको वन छोड़ रहे हो ?
तीर्थों के दर्शन के बहाने,
क्यों कर छल दिल तोड़ रहे हो ?
धनुष तोड़ शादी को आये,
भव-भव का सम्बंध निभाया।
प्रीत प्रेम का रिश्ता करने
मुझको अपने गले लगाया।
भूमण्डल पर शोर हो गया
सीता को क्यों छोड़ रहे हो ? मैं...
संग रही वनवास तुम्हारे,
सुख-दुःख में मैं न घबराई।
कपटी रावण के हरने पर,
नाम लिया हरदम रघुराई।
गर्भवास की इस बेला में
क्यों मुझको अब छोड़ रहे हो ? मैं...
अग्नि परीक्षा ली आपने,
मैंने तब संकल्प लिया था।
विजय शील की हो गई मेरी
धर्म पुण्य ने साथ दिया था।
कदम बढ़ाया मोक्ष महल पे,
अब मुझको क्यों खींच रहे हो ? मैं...

□□□

नारी की व्यथा

मैं नारी !

मैंने छोड़ी

पिता की चार दीवारी

बनी पर घर की पुजारी

मैंने सबको क्या-क्या नहीं दिया ?

पति के लिए

जीवन का समर्पण

पुत्र के लिए

प्राणों का अर्पण

भाई के लिए

दे दी खुशियाँ
ननद के लिए
सपनों की बगिया
देवर के लिए
भाई सा मान
सास के लिए
माँ सम सम्मान
ससुर के लिए
पिता तुल्य आदर
नहीं नहीं,
इन सबने
तुमको क्या दिया
कलह तनाव बंधन
बहुत हो गया क्रंदन
अब न रहेगा
मुझ पर बंधन
अब मैं करूँगी
स्व का निर्माण
जिससे मिलेगा मुक्ति धाम।

□□□

घड़ी

सूर्य और चंद्र
दिन और रात
प्रकाश और अंधकार
निरंतर प्रवाहमान है।
इसके गमन का
बोध कराती
समय बताती
घड़ी
इसमें
घंटा
मिनिट
सैकेण्ड की
सुइयों का जोड़ है
इससे निकलने वाली आवाज
सोते को जगाती
कार्य में लगाती
कर्त्तव्य
आनंद
साहस का
जीवन का संदेश लाती है
पर को जगाती
किन्तु
स्वयं सो जाती है।

□□□

विवाह

चारों ओर
शोर गुल
गीत संगीत नृत्य
सास-ससुर
जेठ-जेठानी
पति-पत्नी
भाई-बहन
देख रहे ये
सुखमय बनने के सपने
जिसमें छिपे थे
स्वयं के खतरे।
वर का आना
वरदान का मांगना
वर-वधू की शादी
कर देगी बरबादी
सिन्दूर की मांग
इच्छाओं का स्वांग
सात फेरे
दुनियाँ के झमेले
जिसके सुखाभास के पीछे
छुपी है
वाह-वाह
आह-आह
तबाह-तबाह

□□□

जैनी होटल

यह है वह स्थान
जहाँ पर
न माँ की ममता
न बीबी की समता
भाई बहन का प्यार नहीं
आपस का तरकार नहीं
वैरे आते ताव जमाते
झूठा काठा सबको खिलाते
स्नेह प्रेम वात्सल्य की
दिखती नहीं झलक जहाँ
फिर भी मेरे जैनी भाई
देते न होटल से जुदाई
होटल से कितनी प्रीति लगाई
गेट पर लिखे बोर्ड की
तुमने न की पढ़ाई
बड़े अक्षरों में लिखा है
जैनी होटल
जैनी हो तो टल
होटल

□□□

बैण्ड बाजे

शादी में बैण्ड बाजे
इसीलिए बजवाते हैं
उनके शोरगुल में
सच्ची आवाज छुपाते हैं
किसी ने पूछा
बैण्ड बाजों से
ये लोग तुम्हें क्यों बजा रहे है ?
कहा बाजों ने
ये हमें यूं बजा रहे हैं
हम भी इनको जता रहे है
जो आ रही है डोली में
वो इन्हे जीवन भर बजायेंगी
इसलिए हम शोर मचा रहे हैं।

□□□

अभिनंदन

बड़ी धूमधाम से खुश होकर
लोग कर रहे थे
नव दम्पत्ति का अभिनंदन
अति शीघ्र छूटे तुम्हारा बंधन
नित नये विवाह का हो आयोजन
ताकि दावत में मिलता रहे भोजन।

□□□

महावीर का सम्मान

वीर महावीर का सम्मान होना चाहिए।
शुद्ध शाकाहार का प्रचार होना चाहिए॥
देश मेरा प्राण प्यारा जो अहिंसा में पला-3
मूक पशुधन का फिर बचाव होना चाहिए।
मांस चर्म त्याग कर करो निजात्म का भला-3
आचरण ही आपकी पहिचान होना चाहिए।
शाकाहार से बचेगी इस वतन की अस्मिता-3
आज इसी मंच से अभियान होना चाहिए।
देश राष्ट्र धर्म का उत्थान आप हम करें-3
'राजश्री' की भावना का मान होना चाहिए।

□□□

मेरा देश महान्

मेरा देश है महान् करुँ नित्य गुणगान,
गुण गाते हुए मन सुख दुःख पाय है।
ऋषि मुनि संत यहाँ करते हैं तप जहाँ,
पुलकित मन मेरा नत हुआ जाय है।
वेशभूषा भाषा के निवासी भी अनेक जहाँ,
संग-संग रहकर जीवन बिताय है।
करोड़ों निरीह पशु कटते हैं जब यहाँ,
दुःख से 'क्षमा' का दिल तब भर आय है॥

□□□

आधुनिक नारी

नारी है कि आरी है कि फैशन की मारी है,
अपने ही शिशु पे चलाये जो कटारी है।
टेढे-मेड़े बाल काटे टेड़ी-मेड़ी चाल चले,
अपने ही लाज की बनी व्यापारी है।
लाल ओंठ ऐसे लगे जैसे लहु पीके आई,
हिंसा और क्रूरता से करती जो यारी है।
सेंट वेंट क्रीम लगा लम्बे नाखुनों को सजा,
शील सदाचार की जो बनी हत्यारी है॥

□□□

बहुरंगी दुनिया

चमचमाती दुनिया के लोग जो सुनहरे हैं।
कथनी और करनी से अंधे और बहरे हैं॥
भ्रष्टाचार शोषण से उनका घर भरा देखा।
जिनकी बड़ी महफिल में श्वान देते पहरे हैं॥
भूखा यदि भाई हो प्यार छोड़ दे धक्के।
भोगों में फंसे मानव लगते बड़े दुहरे हैं॥
तिलक लगा लम्बा, भोले-भाले माथे पर।
और दिल के दरिया में छाये गहरे कुहरे हैं॥
आंख खोल कर देखो जहरीले सांपों को।
'क्षमा' इनसे बचके चलो खतरे बड़े गहरे हैं॥

□□□

आइना

सबकी नजरों में है जब अलग आइना।
कौन समझे तुम्हारी सरल भावना॥
तुम स्वयं में स्वयं को समझते चलो।
अपनी मंजिल पर बढ़ने की रख कामना॥
तेरी तड़फन का अहसास होता किसे।
अपने दिल की व्यथायें स्वयं थामना॥
तुमने किसके लिए है क्या-क्या किया।
नेकी करते हुए फल नहीं चाहना॥
सत्य समता का प्याला तुम पीते चलो।
'क्षमा' धर्म का होगा तभी धारना॥

□□□

सब कदम मिलाइये

लग गई है आग अब कोई इसे बुझाइये,
गिर रही है मंजिले इनको अब बचाइये।
विश्व पर आंतकी आज जुल्म गजब ढा रहा,
रो रहे हैं दिल जहाँ आश तो बंधाइये।
आशावादी देश भी निराशा में बदल गया,
हादसे से व्यथितजन को धैर्य अब दिलाइये।
विश्व युद्ध की जहाँ में हो रही तैयारियाँ,
निर्दोष जन मरे नहीं, हे प्रभु बचाईये।
भोगवाद ने नशाया आज सारे विश्व को,
सत्य धर्म कर्म का इन्हें सबक सिखाइये।
आइये आइये नव बिगुल बजाइये,
धर्म राष्ट्र क्रांति हेतु सब कदम मिलाइये॥

□□□

गुरुवर को नमन

भव की दूरी घटाने बड़ी इक किरण।
कुंथु सिंधु कनक सिंधु की ले शरण॥
फासले कम किये सूरी पद पा गये।
बालवय में बने तुम तो तारण तरण॥
बारह तप त्याग के गुरुवर हैं धनी।
गुप्तिनंदी कवि लिखते पूजन भजन॥
भक्ति सुमनों की माला को अर्पित करें।
कर रही है 'क्षमा' गुरुवर को नमन॥

□□□

जैन लिखना छोड़ दो

ओ जैन लिखने वालों
जरा तो शर्म करो
औरों पे नहीं /खुद पर रहम करो
प्रभु से नहीं/तो कर्म से डरो
जैनी लिखकर तो
जैनी हो नहीं सकते
फिर क्यों/जैनी के नाम पर
कालिमा मंडते
किस-किस कांड में

तुमने दखल ना दिया ?
न जाने/किस किस का लहु पिया?
क्या तुम्हारा जन्म/इसीलिए हुआ ?
क्या आपकी माता से यही मिली दुआ?
क्यों जैनी बन/छैनी बन रहे ?
बड़े-बड़े पापों की/छत्र छाया में
तुम्हारे अरमान पल रहे
याद रखना/ये सब
यही विनश जायेंगे
सारे अरमान/बिन दाम ढह जायेंगे।
बे मौत/तुम्हारे अरमानों का
जनाजा निकेलगा
तुम अगर/अपनी न
सोचो/तो न सही
पर मेरी/एक मान लो कही
कि/अपने नाम के आगे
जैन लिखना छोड़ दो
अन्तरंग से छोडा है
तो बाहर से भी छोड़ दो
या फिर/पाप से रूख मोड़ दो।

□□□

समय अनमोल

समय अनमोल है
दुनिया गोल है
कर्म का खेल है
जीवन एक रेल है
कभी इस गति
कभी उस गति
जीव औ पुद्गल का मेल है
यही समय का खेल है

□□□

आनंद

जिसका मन रहता उत्साहित
वह सोच न सके किसी का अहित
करते हैं सदा पर जन का हित
उसका जीवन रहता आनंदित
न रहता वह चिंतित
सदा ही मन रहा प्रमुदित
मन कभी न हो उसका दु:खित
शुभ कार्य करें सदा संचित
करते नित जो स्वात्मा से प्रीत
वे ही बनते हैं प्रभु के मीत
अपरिग्रह पालन हैं दैनिक रीत
मुनिमार्ग से न होवे भयभीत
न करते किसी का अपमान
सकल जीव से प्रेम समान
उन्हें ही बुलाती मुक्ति रानी
आनंद आ-नंद
आ-नंद
पाओ नित सत् आनंद
आनंद
आनंद।

□□□

आतम की रटन

ओ आत्मा-आत्मा रटने वालों
कुछ तो आत्मा का ध्यान करो
क्यों हुए बावले खुद भी
औरों को भी गुमराह करो
जब खुद को राह दिखती नहीं
औरों को क्या मार्ग बताओगे
जिनवाणी के शब्दों को
कर इधर-उधर
किस-किस गति में धक्के खाओगे
मरीचि ने मिथ्या मत का प्रसार किया
औरों को ले साथ खुद भी नरक में वास किया
आत्मा-आत्मा कहने से होता इसका ज्ञान नहीं
इसे पाना है तो सब तजना ही होगा
है आत्मा अमर देह नश्वर
इसका अनुभव करना होगा
निज स्वरूप पाना है तो
आ जाओ त्याग के मैंदान में
फिर आत्मा की करो व्याख्या
तुम अपने व्याख्यान में।

□□□

आराम

करते सुबह से शाम
निज काम
न ले पाते
कभी हम
उस प्रभु का नाम।
वंश पालन में
लिए आश बुढ़ापे की।
धन संग्रह से कभी तो
हो सकेगा नाम।
इसलिए भरते हैं हम
तिजौरी और गोदाम
न दिखता राम
सताता फिर काम
काम भोग से हुई इन्द्रियाँ शिथिल
तन पर चढ़ा दौर्बल्य
बुढ़ापे में बदलाव आता है
बेटे बहु का व्यवहार
बदल जाता है
सारा जग ठुकराता है
मन में आकुलता बढ़ जाती है

एकाकी व्याकुल जिंदगी
तड़पाती तरसाती है।
तभी आत्मा प्रभु को बुलाती है।
कहती है आ राम, आ राम
भोग भोगे
पर न मिला आराम
आ राम
आराम
आराम।

□□□

आकर्षण में विकर्षण

एक बात सुनी थी मैने
सुनने में थी बड़ी वो प्यारी
बड़ी मनोरम बड़ी थी सुन्दर
सबके मन को हरने वाली
क्योंकि देखा उसके पीछे
सारी दुनियां है मतवाली
जिधर भी देखो उसकी चर्चा
आश्चर्य बढ़ा फिर और भी मेरा
मैं फिर उसकी ओर ही दौड़ा
दौड़-दौड़ कर उस तक पहुँचा
देखा तो एक सुरम्य है पहाड़ी
जिसमें सघन पुष्प की क्यारी
बड़ी ही सुन्दर बड़ी ही न्यारी
जैसे चादर हो रंग वाली
ज्योंहि दौड़ा पास में भागा
और निकट मन चला अभागा
पास पहुँचकर पैर ठिठक गये
मानो यम सम्मुख अड़ गये
जितनी सुन्दर सुनी पहाड़ी
रंग-बिरंगे फुलों वाली
बीचों बीच नाग एक काला
बड़ा भयंकर विष फण वाला।

वह ऐसा फुफकार रहा था
मानों खाने दौड़ रहा था
मैंने सोचा कैसी चर्चा
क्यों जग करता इसकी अर्चा
अब ना इसमें कभी पड़ूँगा
नहीं किसी पर जान धरूँगा
जो बाहर से दिखती सुन्दर
काला विषधर जिसके अंदर
अब न उसकी बात सुनूंगा
खुद पर जोखिम नहीं करूँगा।

□□□

रावण

रावण तुमने क्यों किया ?
सीता का हरण
नारी शक्ति को पहचाने बिना
मायावी बनकर छली थी सीता
दिखलाई कायरता
अर्द्ध चक्री का दम्भ भर
क्यों लाये चोरी से सीता
रावण ने कहा
मत मात प्रश्न मुझसे करना
मैं तो रावण एक ही पापी
हर लाया लक्ष्मण की भाभी
पर अब रावण कितने सारे
मिल जायेंगे द्वारे-द्वारे
पर अब सीता नहीं मिलेगी
सूर्पनखा तैयार खड़ी है
क्योंकि उस समय
राम से नर थे
थी सीता सी नारी
पर अब यह दुनिया सारी
बनी पाप की
सतत पुजारी

घर-घर रावण सा
ही नर है
नारी सुर्पनखा से क्या कम है
इसलिये न अब मुझसे कुछ कहना
मैंने ही दी थी कलयुग को शिक्षा
मैं तो अब सुधार गया हूँ
क्योंकि कटु अनुभव से गुजर रहा हूँ
नरकों की मैं सैर कर रहा हूँ
मैं रावण से राम बनूँगा
सीता हरण कभी न करुँगा
पर मात! इन रावणों को
अब बचा लो
मुझको न अब ताने मारो
दशहरा का कलंक हटा दो
वर्तमान के रावणों को बता दो
मैंने तो सीता एक हरी है
जिसकी गहरी सजा मिली है
इनने कई सीतायें
हरी हैं
फिर भी मान से
मूँछ तनी है
मुझे दशहरा में जलाते
पर खुद को क्यों रहे छिपाते

पाप तुम्हारा नहीं छिपेगा
नरकों का जब द्वार खुलेगा
ओ मुझे जलाने वाले
तुमको भी दुगुना दंड मिलेगा
क्योंकि मैंने तो सिर्फ सीता का
हरण किया था
पुतला दहन नहीं किया था
इसलिये हे कलयुग के रावण
अब भी संभल जाओ
वरना मुझसे भी बदतर
सजा मिलेगी
नरकों की टिकिट कटेगी।

□□□

शंका

नाम है जिसका
दो अक्षर का
पर काम है
बम बारुद सा
भरे घर बरबाद
जो करने
रखती रूप
पिशाच का
कोर्ट कचहरी
तक पहुँचाकर भी
न भरता है
मन जिसका
खून सुखाती
हत्यायें कराती
शांति को जो दूर भगाती
हिंसा का ताण्डव करवाती
दम्पत्ति में मचता झगड़ा
सास बहु का चलता रगड़ा
वह और नहीं है कोई

है वह प्यारी शंका
घर-घर जो बजवाती
डंका
इसका है दो अक्षर
का नाम
पर करती सबका
काम तमाम
इसके चक्कर में
कभी न आना
अपना डंका
कभी न बजाना॥

□□□

अबला

अबला के बल से दुनिया ने
अब तक क्यों खिलवाड़ किया
माना जब अबला नारी को
क्यों उसके उर से जन्म लिया ?
गर सबल परम थे महाबली
तो सबलों के उर में आते ?
माता की शक्ति का परिचय
फिर अबला से तुम क्यों पाते
9-9 महिने का कष्ट किसी
सबलों ने नहीं उठाया है
जिस माँ को अबला कहते हैं
उसने ही बोझ उठाया है
अतएव भ्रान्ति का त्याग करो
कि सबलों में ही बल सारा
उसके बल से ही जन्म मिला
पाया जग का वैभव सारा
और उससे ही वैराग्य हुआ
तो छोड़ी तुमने सब माया।

बन जाओ तुम युग कल्याणी

कंधे पे उठाती साथ सुलाती
फिर कैसे अबला कहलाती
आहार करा निहार उठाती
अबला गिला कभी न लाती
सबल बनाने दूध पिलाती
फिर अबला कैसे कहलाती
अबला कहकर शोषण करना
क्या तुमको शोभा देता है
माता के आंचल को बंदे
क्यों कर तूं धोखा देता है
इस मातृ शक्ति ने ही जग में
जीवन के सुमन खिलाये है
अबला कहलाने वाली से
ये सबल धरा पर आये हैं
अब न अबला खुद को समझो
बन जाओ सीता क्षत्राणी
अबला की बला हटा डालो
बन जाओ युग तुम कल्याणी।

□□□

देश की दुर्दशा

धनवानों की महफिल में कुत्ते भी काजू खाते हैं।
एक गरीब की कुटिया में रोटी न बालक पाते हैं॥
ये है भारत का दया धर्म हम भाषण सभी सुनाते हैं।
दो नम्बर का करके अर्जन घर में ही मौज उड़ाते हैं॥
मेहनत से धन जो कमा रहा उनका अब पेट नहीं भरता।
इन श्रमिकों का करके शोषण धनिकों का तन और मन भरता॥
नन्हा बालक दौड़ा आता माता के गले लिपट जाता।
माँ भूख लगी रोटी दे दे वह बार-बार कहता जाता॥
देखा माता की नयनों से आंसू का स्रोत उमड़ आता।
ना समझ बात को समझ गया बालक भूखा ही सो जाता॥
लज्जा से झुक जाता माथा ये है भारत की शुभ गाथा।
रो रही आज भारत माता उसको न गगन गीत भाता॥
आखिर मजबूर हुआ प्राणी फिर पाप कमाई को खाता।
करुणा सेवा परमोपकार सब न्याय नीति को बिसराता॥

□□□

उड़ान

एरोप्लेन से यात्रा कर रहे
एक सज्जन ने कहा
देश में साम्यवाद आयेगा
दूसरा बोला
अपरिग्रहवाद आयेगा
गरीबी दूर होगी
तीसरा बोला
गरीबी दूर होगी ही नहीं
क्योंकि पूंजीवाद नहीं जायेगा
चौथा बोला कोई आये या न आये
अपन तो अपने बीबी-बच्चो से
मिलने
मुराबादाद जायेगा।

□□□

भारतीय पुलिस

मैत्री गार्डन में
जापानी रूसी और भारतीय तीन मित्र
टहलते हुए कर रहे थे बात
कह रहे थे देश के हालात
पुलिस की करामात
रूसी मित्र ने कहा चोरी का पता
3 दिन में रूसी पुलिस लगा लेती है
जापानी मित्र बोला कैसी भी चोरी हो
पता लगाने में हमारी पुलिस
चौबीस घंटों से ज्यादा समय नहीं लेती है
तब भारतीय मित्र हंस पड़ा
और बोला भारतीय पुलिस
दुनिया भर की पुलिस से निराली है
विश्व में आली है
बहुत भोली भाली है
उसे पन्द्रह दिन पहले से
पता होता है कि
चोरी कब कहाँ
कैसे होने वाली है।

□□□

श्री धर्मतीर्थ

धर्मराजश्री तपोभूमि दिगम्बर जैन ट्रस्ट, कचनेर
द्वारा

प्रकाशित संघ साहित्य

❋ श्री रत्नत्रय आराधना	पंचम संस्करण
❋ श्री रत्नत्रय भक्ति सरिता	नवम संस्करण
❋ श्री गणधर वलय विधान	पंचम संस्करण
❋ श्री रत्नत्रय विधान	प्रथम संस्करण
❋ श्री रत्नत्रय संस्कार प्रवेशिका (भाग-1)	चतुर्थ संस्करण
❋ श्री रत्नत्रय संस्कार प्रवेशिका (भाग-2)	द्वितीय संस्करण
❋ श्री नवग्रह शांति विधान	चतुर्थ संस्करण
❋ श्री कल्याण मन्दिर विधान	द्वितीय संस्करण
❋ श्री पंचकल्याणक विधान	द्वितीय संस्करण
❋ सावधान (काव्य संग्रह)	तृतीय संस्करण
❋ श्री लघु गणधर वलय विधान	तृतीय संस्करण
❋ श्री नवग्रह शांति चालीसा	नवम संस्करण
❋ श्री त्रिकाल चौबीसी विधान	द्वितीय संस्करण
❋ श्री विद्या प्राप्ति विधान	प्रथम संस्करण
❋ श्री कुन्थुगिरी पूजा	प्रथम संस्करण
❋ श्री चन्द्रप्रभु आराधना	प्रथम संस्करण
❋ श्री महाशांति आराधना (वी.सी.डी.)	
❋ श्री वात्सल्य मूर्ति (वी.सी.डी.)	
❋ श्री सम्मेदशिखर वंदना (वी.सी.डी.)	
❋ मेरे पास बाबा... (वी.सी.डी.)	
❋ श्री नवग्रह शांति चालीसा (सी.डी.)	
❋ श्री गुप्तिनंदी गुणगान (सी.डी.)	
❋ ये नवग्रह शांति विधान है (सी.डी.)	
❋ श्री चिंतामणि पूजा (सी.डी.)	
❋ श्री बाहुबली पूजा (सी.डी.)	
❋ श्री महावीर पूजा (सी.डी.)	
❋ श्रीक्षेत्र कुन्थुगिरी (वी.सी.डी.)	
❋ कनकनन्दी गुरुदेव तुम्हारी जय हो ... (सी.डी.)	

प.पू. वात्सल्यमूर्ति, चारित्र चंद्रिका, गणिनी आर्यिका राजश्री माताजी

जन्म :	**क्षुल्लिका दीक्षा :**
17 मार्च, 1961	वर्ष-1984
रायपुर (छत्तीसगढ)	छिंदवाड़ा (मध्यप्रदेश)
आर्यिका दीक्षा :	**गणिनी पदारोहण :**
19 अप्रैल, 1987	17 फरवरी, 1997
श्योपुर कलाँ (ग्वालियर)	अहमदाबाद (गुजरात)

समाधि :
7 मई, 2007 औरंगाबाद (महाराष्ट्र)

पुण्यार्जक

श्री जयप्रकाशजी श्रीमती आशा मोला परिवार

इन्दौर (म.प्र.)

प्रकाशक

श्री धर्मतीर्थ

धर्मराजश्री तपोभूमि दिगम्बर जैन ट्रस्ट

पोस्ट-सावगाँव, औरंगाबाद (महाराष्ट्र) • Email : dharamrajshree@gmail.com

चतुर्थ संस्करण

प्रथम संस्करण

प्रथम संस्करण

पंचम संस्करण

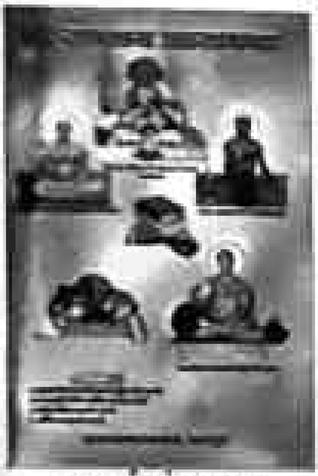

चतुर्थ संस्करण

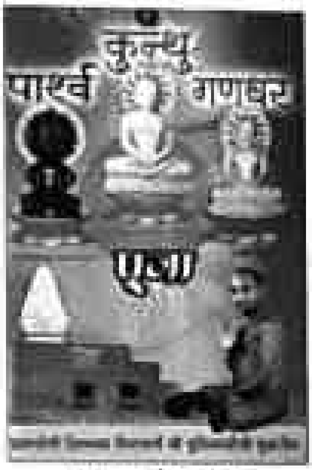

प्रथम संस्करण

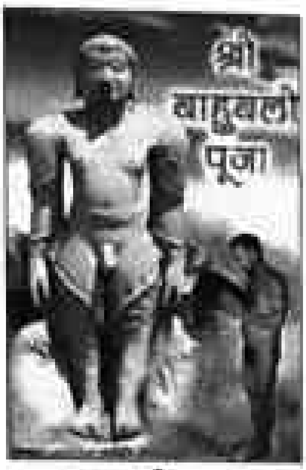

प्रथम संस्करण

षष्टम् संस्करण

डी.वी.डी. 1-2

द्वितीय संस्करण

प्रथम संस्करण

षष्टम् संस्करण